राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 45 ■ अंक 06 ■ सितम्बर 2023 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 36

भारत सर्वप्रथम

उद्यमिता दिवस पखवाड़ा की झलकियां

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 45, अंक 06
सितम्बर 2023

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।

अबकी बार

05 **चंद्र से सूर्य तक**

23 अगस्त 2023 । यह कोई सामान्य दिन नहीं था । कई सप्ताह से इस दिन का इंतजार भारत के करोड़ों लोग बेसब्री से कर रहे थे । मंदिरों में पूजा-पाठ और अर्चना हो रही थी...

संपादकीय 04

India's Chandrayaan–3 conquers the south pole of the moon 11

राज्य सरकार से बदतर हालात को ठीक करने की मांग 13

जिम्मेदार नागरिक बनने का पहला कदम है छात्रसंघ चुनाव 16

WOSY held International Conference on "Solidarity for Sustainability" 18

जादवपुर विश्वविद्यालय में छात्र की मौत शांतिपूर्ण प्रदर्शन करते अभाविप नेता गिरफ्तार 20

Karnataka govt. has no valid reason to scrap NEP: ABVP 22

वीरता की प्रतिमान : महारानी दुर्गावती 24

छत्तीसगढ़ में दुष्कर्म के विरोध में अभाविप का प्रदर्शन 26

ग्वालियर में खेलो भारत गतिविधि से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन 27

ABVP–JNU Delegation Meets UGC chairman, Demand Ayurveda Biology As Separate Subject 28

मेधा के आधार पर प्रवेश देने की मांग, मुख्यमंत्री धामी को अभाविप ने सौंपा ज्ञापन 29

अभाविप ने युवाओं को सिखाए उद्योग के गुर 30

'स्वयंसिद्धा' कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राएं सम्मानित 31

राज्यपाल से वित्तीय भ्रष्टाचार में लिप्त पूर्व कुलपति पर कार्रवाई की मांग 32

अभाविप के पूर्व संगठन मंत्री वीरेश्वर द्विवेदी का निधन 33

अभाविप ने मनाया स्वाधीनता दिवस सुदूर गांवों तक फहराया तिरंगा 34

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

अदभुत, अविश्वसनीय। दुनिया सांस थाम कर बैठी थी। चंद्रयान ने चंद्रमा के धरातल को छुआ और इसरो के नियंत्रण कक्ष में भारतमाता की जय और वन्दे मातरम के नारे गूंज उठे। भारत ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सुरक्षित रूप से चंद्रयान को उतार कर एक इतिहास रच दिया था।

इसके अगले सप्ताह ही सूर्य का अध्ययन करने के लिये आदित्य उपग्रह अपने गंतव्य के लिये रवाना हो गया। अनेक कक्षाओं को पार कर आदित्य चार माह में अपने गंतव्य तक पहुंचेगा। अपने वैज्ञानिकों के माध्यम से भारत ने अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन किया है। देश ने अपनी आंखों के सामने इतिहास घटित होते देखा है और जिसने इस रोमांच का साक्षात्कार किया है उसके लिये यह जीवन भर के लिये स्मृति पर अंकित हो गयी घटना है।

अपने ब्रह्मांड को जानने की जिज्ञासा धरती पर उत्पन्न प्रत्येक समाज में सदैव से रही है। भारत के मनीषियों ने इसका अध्ययन न केवल उनके विषय में जानने के उपक्रम के रूप में किया अपितु मानवजीवन, प्रकृति और अन्य ग्रहों पर पड़ने वाले सूक्ष्म प्रभावों का अध्ययन भी गहनता से किया। भारतीय ज्ञान परम्परा में खगोल विज्ञान और ज्योतिष आदि इसके प्रमाण हैं। सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण जैसी खगोलीय घटनाओं का विवरण और ग्रहों की स्थिति का सटीक वर्णन रामायण, महाभारत और परवर्ती साहित्य में प्रचुरता से मिलता है।

भारत में ज्ञान की परम्परा है जो निरंतर प्रवाहमान है। सहस्रों वर्षों की इस यात्रा में अनेक काल कठिनाई भरे रहे हैं, विशेष रूप से पिछली कुछ शताब्दियां, जब अपने अस्तित्व को बचाये रखने का संघर्ष ही महत्वपूर्ण हो गया था, तब भी समाज ने इस ज्ञान परंपरा को संजोये रखा। यह इसी का परिणाम है कि आज चंद्र और सूर्य, दोनों के अभियान से जुड़े वैज्ञानिकों में एक बड़ी संख्या ऐसे युवाओं की है जो कथित पिछड़े इलाकों से, संसाधनों के अभाव से जूझते हुए, सरकारी विद्यालयों अथवा सरस्वती शिशु मंदिर जैसे मातृभाषा में शिक्षा देने वाले विद्यालयों से निकलकर इस स्थान तक पहुंचे हैं।

भारत की इस ज्ञान परम्परा को कोसने, उसे पिछड़ा बताने, अंग्रेजी भाषा ज्ञान के अभाव में आधुनिक शोध प्रवृत्तियों से अपरिचित होने का आरोप मढ़ने वाले लोगों के लिये यह एक सबक है कि यदि भाषा के बंधन न थोपे जायें और प्रतिभा को निखारने का अनुकूल अवसर प्राप्त हो तो भारतीय मेधा अपने आप को साबित करने में सक्षम है। यही कारण है कि परिस्थिति से जूझ कर जो लोग इन गांवों-कस्बों से निकल कर इसरो तक पहुंचे हैं उन्होंने आज भारत को यह गौरवपूर्ण इतिहास को बनते देखने का अवसर दिया है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि नयी शिक्षा नीति में इस बात के लिये पर्याप्त अवसर है कि सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले बाल-तरुण अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर समाजजीवन के विविध आयामों में अपने लिये अवसर खोज सकते हैं। भाषा अब उनके लिये बंधन नहीं बल्कि माध्यम के रूप में सहयोगी भूमिका में है। यह विश्वास दिलाती है कि आने वाले समय में हम प्रतिभाओं को और आगे बढ़ते हुए और राष्ट्र पुनर्निर्माण में अपना योगदान देते हुए देखेंगे।

भारतीय भाषाओं के महत्व को रेखांकित करने और अंग्रेजी के व्यामोह से उबरने के प्रतीक के रूप में 14 सितम्बर को मनाये जाने वाले हिन्दी दिवस की शुभकामनाओं सहित,

आपका

संपादक

चंद्र से सूर्य तक

| संजय दीक्षित |

23 अगस्त 2023 । यह कोई सामान्य दिन नहीं था । कई सप्ताह से इस दिन का इंतजार भारत के करोड़ों लोग बेसब्री से कर रहे थे । मंदिरों में पूजा-पाठ और अर्चना हो रही थी, तो अन्य धार्मिक स्थलों में भी प्रार्थनाओं का दौर जारी था । दिन गुजरने के बाद जैसे ही शाम को घड़ी ने पांच बजने का संकेत दिया तो भारत ही नहीं, विश्व के तमाम देशों में जनता टेलीविजन के सामने जुटने लगी। जो टेलीवजन से दूर थे, वह अपने मोबाइल, कम्प्यूटर के सामने थे । चंद्रयान-3 की लैडिंग का दृश्य सबकी आंखों के सामने से गुजर रहा था । धड़कनें बढ़ी हुई थीं, उत्कंठा और तनाव का भाव चेहरे पर पर था । दिमाग में बस यही सवाल था कि क्या होगा ? और जैसे ही शाम 6 बजकर 4 मिनट पर चंद्रयान-3 के विक्रम लैंडर ने चन्द्रमा के दक्षिणी क्षेत्र में अपने पैर जमाए, दुनिया में तहलका मच गया, ख़ुशी के मारे जनता झूमते हुए सड़क पर उतर आई और हर कोई एक-दूसरे को बधाई देने लगा ।

चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग से भारत की 140 करोड़ जनता अभिभूत थी । पूरा विश्व भारत की ऐतिहासिक सफलता से भौचक्का था । कई देश विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि भारत विश्व का पहला ऐसा देश बन गया है, जिसने चन्द्रमा के दक्षिणी क्षेत्र पर अपने चंद्रयान-3 को पहुंचा कर एक नया इतिहास लिख दिया है । नए इतिहास की साक्षी बनी भारत की जनता अपने वैज्ञानिकों की क्षमता पर गर्व करते हुए उन्हें बधाई दे रही थीं । भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के दृढ़ संकल्प और वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों का सुपरिणाम था कि 41 दिन लंबी यात्रा व दिल की धड़कन बढ़ा देने वाली लैंडिंग प्रक्रिया के बाद अंततः चंद्रयान-3 मिशन के माध्यम से भारत भी चांद पर पहुंचने वाले देशों में अपना नाम दर्ज करा चुका था । इस सफलता को केवल इसरो के वैज्ञानिक, भारत का हर आम और खास व्यक्ति ही नहीं देख रहा था, बल्कि विश्व के कई देशों के राष्ट्राध्यक्ष, वैज्ञानिक भी देख रहे थे । ब्रिक्स सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका में मौजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने और चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग के बाद तिरंगा लहराकर अपनी ख़ुशी को व्यक्त किया।

विश्व का पहला देश बना भारत

इसरो के महत्वाकांक्षी तीसरे चंद्रमा मिशन चंद्रयान-3 के लैंडर माड्यूल (एलएम) ने 23 अगस्त की शाम को चंद्रमा के दक्षिणी क्षेत्र की सतह को चूम

कर अंतरिक्ष विज्ञान में सफलता का नया इतिहास लिखा । इसरो के वैज्ञानिकों के अनुसार पिछले बार मिली असफलता को ध्यान में रखते हुए इस अभियान के अंतिम चरण में सारी प्रक्रियाएं पूर्व निर्धारित योजनाओं के अनुरूप ठीक वैसे ही पूरी हुईं, जैसी निर्धारित की गयी थीं । अभी तक अमेरिका, तत्कालीन सोवियत संघ (रूस) और चीन ने चंद्रमा की सतह पर लैंडर उतारे थे, पर यह सभी चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर नहीं पहुंचे थे । हाल ही में रूस का लूना-25 स्पेसक्राफ्ट भी चंद्रमा पर उतरने से पहले नष्ट हो गया । उधर इन सब स्थितियों से बेखबर 23 अगस्त की शाम को चंद्रयान-3 ने अपनी सफलता की कहानी लिख दी । इसरो के वैज्ञानिकों के अनुसार चंद्रयान-3 के विक्रम नाम वाले लैंडर के उतरने की प्रक्रिया शाम 5.44 बजे आरंभ हुई। चांद की सतह से 6.8 किलोमीटर की दूरी पर पहुंचने पर विक्रम लैंडर के केवल दो इंजन का प्रयोग हुआ और बाकी दो इंजन बंद कर दिए गए । इसका उद्देश्य सतह के और करीब आने के दौरान विक्रम लैंडर को 'रिवर्स थ्रस्ट' (सामान्य दिशा की विपरीत दिशा में धक्का देना, ताकि लैंडिंग के बाद गति कम की जा सके) देना था। चांद की सतह के करीब पहुंचने के क्रम में विक्रम लैंडर ने अपने सेंसर और कैमरों का इस्तेमाल कर चांद की सतह की जांच कर सुनिश्चित किया कि कहीं कोई बाधा तो नहीं है। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सब कुछ वैसा ही पाया, जिसकी कल्पना पहले ही की जा चुकी थी । अंततः विक्रम लैंडर चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलता के साथ उतर गया ।

लगभग 11 दिन तक सक्रिय रहा प्रज्ञान रोवर

इसरो के अनुसार चंद्रमा की सतह और आसपास के वातावरण का अध्ययन करने के लिए विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर के पास एक चंद्र दिवस (पृथ्वी के लगभग 14 दिन के बराबर) का समय मिला । 23 अगस्त को विक्रम लैंडर को इसलिए उतारा गया क्योंकि यह समय ऐसा है, जब चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव वाले क्षेत्रों में सूर्य का प्रकाश होता है । चन्द्रमा की सतह पर उतरा चार पहियों वाला विक्रम लैंडर और छह पहियों वाले प्रज्ञान रोवर का कुल वजन 1,752 किलोग्राम है। लैंडिंग को सुरक्षित बनाने के लिए विक्रम लैंडर में कई सेंसर लगाए गए। इनमें एक्सीलरोमीटर, अल्टीमीटर, डाप्लर वेलोसीमीटर, इनक्लिनोमीटर, टचडाउन सेंसर और कैमरे शामिल हैं। लैंडर की गोद में बैठकर चांद पर पहुंचे प्रज्ञान रोवर ने लैंडिंग के लगभग ढाई घंटे बाद अपना काम प्रारम्भ किया। प्रज्ञान रोवर धूल के पूरी तरह से खत्म होने के बाद विक्रम लैंडर से बाहर निकाला गया । बाहर आने के बाद प्रज्ञान रोवर ने अपनी यात्रा के निशान चांद की सतह पर छोड़ने प्रारम्भ कर दिए । इसरो वैज्ञानिकों के अनुसार प्रज्ञान रोवर के पहियों को इस तरह से बनाया गया कि चांद की सतह पर भ्रमण करते समय उसकी सतह पर इसरो और अशोक स्तंभ के निशान छोड़ता जाएगा । विक्रम लैंडर से निकल कर प्रज्ञान रोवर के पेलोड ने चांद पर ऑक्सीजन और सल्फर समेत अन्य पदार्थों की मौजूदगी का पता लगाया है । साथ ही चांद की सतह पर तापमान की माप की । इसरो के अनुसार चांद पर रोवर प्रज्ञान ने एल्युमिनियम, सल्फर, आयरन, टाइटेनियम, मैगनीज, सिलिकॉन और ऑक्सीजन को खोज लिया है । साथ ही हाइड्रोजन की तलाश भी की जा रही है ।

चन्द्रमा के दक्षिण ध्रुव पर ऐसे पहुंचा चंद्रयान-3

इसरो के वैज्ञानिकों के अनुसार चंद्रमा के ध्रुवीय क्षेत्र पर्यावरण और उनसे होने वाली कठिनाइयों के कारण बहुत अलग भूभाग हैं और इसलिए अभी अज्ञात बने हुए हैं। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर जमी बर्फ से भविष्य के अभियानों के लिए आक्सीजन, ईंधन और पेयजल मिलने की संभावना भी है। यहां तक पहुंचने के लिए चंद्रयान-3 की प्रकिया 14 जुलाई 2023 को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से प्रारम्भ हुई थी । एलवीएम3-एम4 राकेट यहीं से चंद्रयान-3 को लेकर रवाना हुआ था। इसके बाद पृथ्वी से दूर कई बार चंद्रयान-3 की कक्षाएं बदली। पृथ्वी की अलग-अलग कक्षाओं में परिक्रमा करते हुए 1 अगस्त को यान पृथ्वी की कक्षा छोड़कर चंद्रमा की कक्षा की ओर बढ़ने लगा और फिर 5 अगस्त को चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश कर गया । 6 अगस्त को चंद्रयान-3 ने पहली बार कक्षा बदली। इसके बाद 9, 14 और 16

अगस्त को कक्षाओं में बदलाव करते हुए चंद्रयान-3 चंद्रमा के और निकट पहुंच गया । 17 अगस्त को चंद्रयान-3 के प्रोपल्शन माड्यूल और लैंडर माड्यूल अलग-अलग हो गए और लैंडर माड्यूल चंद्रमा की सतह की ओर बढ़ने लगा । 18 अगस्त को पहली डीबूस्टिंग (धीमा करने की प्रक्रिया) पूरी हुई। 19-20 अगस्त की मध्य रात्रि दूसरी डीबूस्टिंग के बाद प्रज्ञान रोवर को अपने भीतर सहेजे विक्रम लैंडर चन्द्रमा की सबसे करीबी कक्षा में पहुंचा और फिर 23 अगस्त की शाम को चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतर कर पूरे विश्व को हैरत में डाल दिया । इस मिशन में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा और यूरोपियन अंतरिक्ष एजेंसी ने भी अपने-अपने ढंग से भारत का सहयोग किया ।

होप टेस्ट में सफल होकर सो गए सभी पेलोड

चंद्रमा पर मौजूद विक्रम लैंडर को इसरो वैज्ञानिकों ने पुनः लैंड कराने का कारनामा भी कर दिखाया । 4 सितम्बर को पुनः लेंडिंग के लिए विक्रम लैंडर ने 40 सेंटीमीटर ऊपर उठने के बाद लगभग 40 सेंटीमीटर की दूरी तय की और फिर साफ्ट लैंडिंग की। इसे वैज्ञानिकों ने 'होप' टेस्ट का नाम दिया । वैज्ञानिकों ने उम्मीद व्यक्त की है कि 'होप' टेस्ट में मिली सफलता ने भविष्य में चंद्रमा से नमूना लाने की राह प्रशस्त कर दी है । इसके साथ ही लगभग 11 दिन तक अध्ययन के बाद चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अंधेरा होने के साथ ही 4 सितम्बर को चंद्रयान-3 के सभी पेलोड 'स्लीप मोड' में चले गए। वैज्ञानिकों का कहना है कि चन्द्रमा के इस क्षेत्र में 22 सितंबर को जब सूर्योदय होगा तो लैंडर विक्रम और रोवर 'प्रज्ञान' पुनः सक्रिय हो जाएंगे और फिर सभी पेलोड एक और चंद्र दिवस में काम करके अधिक से अधिक जानकारियां देकर स्वर्णिम भविष्य की पटकथा लिखेंगे। स्लीप मोड में जाने से पहले विक्रम लैंडर के पेलोड ने चंद्र सरफेस थर्मोफिजिकल एक्सपेरिमेंट (चेस्ट), रंभा-एलपी और चंद्र कंपन गतिविधि उपकरण (इल्सा) के डाटा को धरती पर भेज दिया था ।

चन्द्रमा पर "तिरंगा" और "शिवशक्ति"

चंद्रयान-3 का विक्रम लैंडर जिस स्थान पर उतरा, उसे अब 'शिव शक्ति' के नाम से जाना जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेंगलुरु में इसरो वैज्ञानिकों से मिलने के बाद विक्रम लैंडर के उतरने वाले स्थान का नाम 'शिवशक्ति' रखते हुए कहा कि शिव में मानवता के कल्याण का संकल्प समाहित है और शक्ति से हमें उन संकल्पों को पूरा करने का सामर्थ्य मिलता है। चंद्रमा का यह "शिवशक्ति" प्वाइंट हिमालय के कन्याकुमारी से जुड़े होने का बोध कराता है। विज्ञान की खोज के कल्याणकारी मूल पर जोर देते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि चंद्रमा का "शिवशक्ति" प्वाइंट, सदियों तक भारत के इस वैज्ञानिक और दार्शनिक चिंतन का साक्षी बनेगा। इसके साथ ही जिस स्थान पर चंद्रयान-2 ने अपने पदचिन्ह छोड़े थे, उस स्थान को अब 'तिरंगा' कहा जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी के अनुसार यह तिरंगा प्वाइंट, भारत के हर प्रयास की प्रेरणा बनेगा और हमें सीख देगा कि कोई भी विफलता आखिरी नहीं होती। अगर दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो सफलता मिलकर ही रहती है।

23 अगस्त होगा भारत का राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस

चंद्रमा पर चंद्रयान-3 की लैंडिंग के दिन को 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' के रूप में मनाया जाएगा। यह घोषणा करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उम्मीद व्यक्त की है कि राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस विज्ञान, तकनीक और नवाचार की चेतना का उत्सव मनाएगा और और हमें हमेशा प्रेरित करता रहेगा। अंतरिक्ष क्षेत्र की क्षमताएं उपग्रहों के प्रक्षेपण और अंतरिक्ष की खोज तक ही सीमित नहीं हैं और इसकी ताकत ईज ऑफ लिविंग और ईज ऑफ गवर्नेंस में देखी जा सकती है। साथ ही प्रधानमंत्री मोदी ने इसरो से केंद्र और राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों के सहयोग से 'गवर्नेंस में स्पेस टेक्नोलॉजी' पर राष्ट्रीय हैकाथॉन आयोजित करने के लिए भी कहा है । माना जा रहा है कि इससे शासन प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा, जो देशवासियों को आधुनिक समाधान प्रदान करेगा।

भारत का चंद्रयान मिशन

भारत के चन्द्रमा तक पहुंचने का स्वप्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने देखा था । लेकिन

चन्द्रमा तक पहुंचने के लिए भारत ने 2013 में प्रयास प्रारम्भ किए । भारत का चन्द्रमा पर जाने का पहला मिशन चंद्रयान-1 था । इसे इसरो के वैज्ञानिकों ने 4 अक्टूबर, 2013 को प्रारम्भ किया था। चंद्रयान-1 में एक चंद्र ऑर्बिटर और एक इम्पैक्टर को जोड़ा गया था । इसमें ऐसे कई उपकरण भी शामिल थे, जो संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, स्वीडन और बुल्गारिया जैसे देशों में बनाए गए थे। चंद्रयान-1 ने लांच होने के बाद चंद्रमा के चारों ओर 3,400 से अधिक परिक्रमाएं कीं लेकिन 29 अगस्त, 2009 को चंद्रयान-1 के साथ संचार प्रक्रिया बंद हो गयी और यह मिशन समाप्त हो गया । लेकिन यह मिशन भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को गति देने का माध्यम बन गया ।

इसके बाद चंद्रयान-2 की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इसरो द्वारा विकसित चंद्रयान-2 में एक चंद्र ऑर्बिटर, एक लैंडर और एक रोवर को शामिल किया गया, जिनका निर्माण भारत में ही हुआ था । 22 जुलाई, 2019 को आंध्र प्रदेश के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान-2 को लॉन्च किया गया । सभी बाधाओं को पार करते हुए 20 अगस्त, 2019 को चंद्रमा की कक्षा में चंद्रयान-2 पहुंच गया, लेकिन 7 सितंबर, 2019 को उतरने के समय लैंडर अपने इच्छित स्थान से भटक कर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस दुर्घटना से इसरो के वैज्ञानिकों को झटका तो लगा, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और परिणाम चंद्रयान-3 की सफलता के रूप में सभी के सामने है ।

महत्वपूर्ण है चन्द्रमा का दक्षिण ध्रुव

चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करके चंद्रयान-3 ने इतिहास रच दिया क्योंकि इस जगह पर लैंडर उतारने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया है । इसरो वैज्ञानिकों के लिए यहां पर लैंडिंग कराना सबसे बड़ी चुनौती थी । लेकिन वैज्ञानिकों ने ऐसा कर दिखाया । चन्द्रमा का दक्षिणी ध्रुव पूरे विश्व के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती बना हुआ है । चन्द्रमा का दक्षिणी ध्रुव ऐसा क्षेत्र है, जहां सूरज की किरणें सीधी नहीं पड़तीं। तिरछी किरणों के कारण यहां का तापमान दूसरे हिस्से के मुकाबले थोड़ा कम रहता है और यही इसकी विशेषता है । इसी विशेषता के कारण ऐसा माना जा रहा है कि यहां पर प्राकृतिक सम्पदा मिल सकती है । तापमान कम होने के कारण यहां पानी और खनिज सम्पदा मिलने की उम्मीद की जा रही है ।

चन्द्रमा के बाद सूर्य की बारी

चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान-3 के सफलतापूर्वक पहुंचने के बाद इसरो ने अब सूर्य को अपना लक्ष्य बनाया है । सूर्य का अध्ययन करने के लिए 2 सितम्बर को भारत की राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो ने आदित्य-एल1 मिशन को लॉन्च किया। आदित्य-एल1 मिशन को श्रीहरिकोटा स्थित इसरो के पीएसएलवी रॉकेट द्वारा सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया। इसरो के अनुसार एल-1 तक पहुंचने में आदित्य एल-1 को लगभग चार माह का समय लगेगा । आदित्य एल-1 सूर्य का अध्ययन करने वाला मिशन है। इसरो ने इसे पहला अंतरिक्ष आधारित वेधशाला श्रेणी का भारतीय सौर मिशन बताया है। आदित्य-एल1 अंतरिक्ष यान को सूर्य-पृथ्वी प्रणाली के लैग्रेंजियन बिंदु-1 (एल-1) के चारों ओर एक प्रभामंडल कक्षा में स्थापित करने की योजना है, जो पृथ्वी से लगभग 15 लाख किलोमीटर दूर है। जानकारी के अनुसार लैग्रेंजियन बिंदु उस स्थिति को कहा जाता है, जहां दो खगोलीय पिंडों के बीच कार्य करने वाले सभी गुरुत्वाकर्षण बल एक-दूसरे को निष्प्रभावी कर देते हैं। इस वजह से एल-1 बिंदु का उपयोग अंतरिक्ष यान के उड़ने के लिए किया जा सकता है।

सूर्य का गहन अध्ययन

भारत के महत्वाकांक्षी सौर मिशन आदित्य एल-1 सौर कोरोना (सूर्य के वायुमंडल का सबसे बाहरी भाग) की बनावट और इसके तपने की प्रक्रिया, इसके तापमान, सौर विस्फोट और सौर तूफान के कारण और उत्पत्ति, कोरोना और कोरोनल लूप प्लाज्मा की बनावट, वेग और घनत्व, कोरोना के चुंबकीय क्षेत्र की माप, कोरोनल मास इजेक्शन (सूरज में होने वाले सबसे शक्तिशाली विस्फोट जो सीधे पृथ्वी की ओर आते हैं) की उत्पत्ति, विकास और गति, सौर हवाएं और अंतरिक्ष के मौसम को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन

चंद्रयान-3 की सफलता से पैदा हुई नईं चेतना : प्रधानमंत्री मोदी

दक्षिण अफ्रीका में ब्रिक्स सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ध्यान भी चंद्रयान-3 पर था और चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग को देखकर वह भी भावविभोर हो गए । दक्षिण अफ्रीका से इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "जब हम अपनी आंखों के सामने ऐसा इतिहास बनते हुए देखते हैं, तो जीवन धन्य हो जाता है। ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं, राष्ट्र जीवन की चिरंजीव चेतना बन जाती हैं। ये पल अविस्मरणीय है। ये क्षण अभूतपूर्व है। ये क्षण, विकसित भारत के शंखनाद का है। ये क्षण, नए भारत के जयघोष का है। ये क्षण, मुश्किलों के महासागर को पार करने का है। ये क्षण, जीत के चंद्रपथ पर चलने का है। ये क्षण, 140 करोड़ धड़कनों के सामर्थ्य का है। ये क्षण, भारत में नई ऊर्जा, नया विश्वास, नईं चेतना का है। ये क्षण, भारत के उदयीमान भाग्य के आह्वान का है। अमृतकाल की प्रथम प्रभा में सफलता की ये अमृतवर्षा हुई है। हमने धरती पर संकल्प लिया, और चांद पर उसे साकार किया। आज हम अन्तरिक्ष में नए भारत की नई उड़ान के साक्षी बने हैं।"

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका में होने के बाद भी हर देशवासी की तरह मेरा मन चंद्रयान महाअभियान पर भी लगा हुआ था। नया इतिहास बनते ही हर भारतीय जश्न में डूब गया है, हर घर में उत्सव शुरू हो गया है। हृदय से मैं भी अपने देशवासियों के साथ, अपने परिवारजनों के साथ उल्लास से जुड़ा हुआ हूं। मैं टीम चंद्रयान को, इसरो को और देश के सभी वैज्ञानिकों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं, जिन्होंने इस पल के लिए वर्षों तक इतना परिश्रम किया है। उत्साह, उमंग, आनंद और भावुकता से भरे इस अद्भुत पल के लिए मैं 140 करोड़ देशवासियों को भी कोटि-कोटि बधाई देता हूं । हमारे वैज्ञानिकों के परिश्रम और प्रतिभा से भारत, चंद्रमा के उस दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा है, जहां आज तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुंच सका है। आज के इस दिन को देश हमेशा-हमेशा के लिए याद रखेगा। यह दिन हम सभी को एक उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। ये दिन हमें अपने संकल्पों की सिद्धि का रास्ता दिखाएगा। ये दिन, इस बात का प्रतीक है कि हार से सबक लेकर जीत कैसे हासिल की जाती है। देश के सभी वैज्ञानिकों को बहुत-बहुत बधाई और भविष्य के मिशन के लिए ढेरों शुभकामनाएं ।

गौरवशाली क्षण है चन्द्रयान-3 की सफलता : अभाविप

चंद्रयान-3 अभियान की सफलता पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने सभी देशवासियों को शुभकामनाएं दी हैं । अपने एक बयान में अभाविप ने कहा है कि चन्द्रयान-3 की सफलता से देश की वैज्ञानिक प्रगति में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया है । भारत की यह वैज्ञानिक प्रगति सम्पूर्ण विश्व के लिए शुभ तथा शोध आदि क्षेत्र में पथ प्रशस्त करने वाली होगी।

अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल तथा राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने सभी अभाविप कार्यकर्ताओं की शुभेच्छाओं को प्रेषित करते हुए चन्द्रयान-3 अभियान से जुड़ी वैज्ञानिक टीम व सहायकों को धन्यवाद दिया तथा देश की उत्तरोत्तर वैज्ञानिक प्रगति की कामना की। अभाविप ने चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग पर दिल्ली स्थित रामजस कॉलेज के मैदान में साईकिल रैली का आयोजन किया और इस गौरवपूर्ण उपलब्धि का उत्सव मनाया।

करेगा। आदित्य-एल1 मिशन सूर्य का व्यवस्थित अध्ययन करने के लिए सात वैज्ञानिक पेलोड का एक सेट ले गया है । आदित्य-एल1 के सातों विज्ञान पेलोड भारत की विभिन्न प्रयोगशालाओं द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित किए गए हैं। यह पेलोड सूर्य के वायुमंडल के सबसे बाहरी भाग यानी सौर कोरोना और सूरज में होने वाले सबसे शक्तिशाली विस्फोटों का अध्ययन करेंगे । साथ ही सौर प्रकाशमंडल और क्रोमोस्फीयर की तस्वीरें लेंगे। इसके साथ ही सौर विकिरण में होने वाले बदलावों, सौर पवन और शक्तिशाली आयनों के साथ-साथ उनके ऊर्जा वितरण का अध्ययन भी करेंगे।

क्या है L-1 पॉइंट

धरती से सूर्य की दूरी लगभग 15 करोड़ किलोमीटर है । इस दूरी के बीच पांच लैग्रेंज पॉइंट्स हैं, जिन्हें एल-1, एल-2, एल-3, एल-4 और एल--5 पॉइंट के नाम से जाना जाता है । एल-1, एल-2, एल-3 स्थिर नहीं है. इनकी स्थिति बदलती रहती है. जबकि एल-4 और एल-5 पॉइंट स्थिर हैं, जो अपनी स्थिति नहीं बदलते हैं । एल-1 इसका पहला पॉइंट है, जो पृथ्वी से 15 लाख किलोमीटर दूर स्थित है । एल-1 पॉइंट को लैग्रेंजियन पॉइंट, लैग्रेंज पॉइंट, लिबरेशन पॉइंट या एल-पॉइंट के तौर पर जाना जाता है । वैज्ञानिकों के अनुसार एल-1 वह स्थान है, जहां पर पृथ्वी और सूर्य के गुरुत्वाकर्षण के बीच एक संतुलन होता है । पृथ्वी और गुरुत्वाकर्षण के बीच संतुलन होने से एक सेंट्रिफ्यूगल फोर्स बन जाता है और इसकी वजह से स्पेसक्राफ्ट एक जगह स्थिर रह सकता है। यह वह स्थान भी हैं, जहां दिन-रात की प्रक्रिया प्रभावित नहीं करती । यहां से सूर्य को 24 घंटे देखा जा सकता है । यह बिंदु पृथ्वी के निकट है और यहां से संचार व्यवस्था करना आसान होता है । यही कारण है कि यह स्थान सूर्य के अध्ययन के लिए बेहतर माना जाता है ।

वैज्ञानिक अवधारणाएं सबसे पहले वेदों में मिली : डॉ. श्रीधर पाड़ीकर सोमनाथ

चंद्रयान-3 की सफलता के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष डॉ. श्रीधर पाड़ीकर सोमनाथ का कहना है कि चंद्रयान-3 की यात्रा, चंद्रयान-1 से प्रारम्भ हुई थी, जो चंद्रयान-2 में भी जारी रही । चंद्रयान-3 की सफलता इसरो नेतृत्व एवं वैज्ञानिकों की पीढ़ियों की मेहनत का परिणाम है । यह सफलता बहुत बड़ी और और प्रोत्साहित करने वाली है । इसके लिए वैज्ञानिकों की पूरी टीम के योगदान को याद किया जाना चाहिए ।

उन्होंने कहा कि भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान का केंद्र रहा है । बीजगणित, वर्गमूल, समय की अवधारणा, वास्तुकला, ब्रह्मांड की संरचना, धातु विज्ञान और विमानन जैसी वैज्ञानिक अवधारणाएं सबसे पहले वेदों में पाई गई थीं। यह भारतीय खोजें अरब देशों के माध्यम से यूरोप तक पहुंचीं और फिर उन्हें पश्चिमी अवधारणाओं के रूप में सामने रखा गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस समय संस्कृत एक मौखिक भाषा थी और बाद में लोगों ने इसके लिए देवनागरी लिपि का उपयोग करना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि महर्षि पाणिनि ने संस्कृत व्याकरण के नियमों को लिखा था और भाषा की वाक्य रचना और संरचना इसे "वैज्ञानिक विचारों और प्रक्रियाओं को व्यक्त करने" के लिए आदर्श बनाती है।

इसरो प्रमुख सोमनाथ के अनुसार भारत चांद पर ही नहीं, बल्कि मंगल और शुक्र पर भी यात्रा करने की क्षमता रखता है। हमें अपना आत्मविश्वास बढ़ाने की जरूरत है और अंतरिक्ष क्षेत्र का विकास होना चाहिए । इससे पूरे देश का विकास होगा । यही हमारा मिशन है। हम उस विजन को पूरा करने के लिए तैयार हैं, जो प्रधानमंत्री मोदी ने हमें दिया है। हम इस मिशन की कामयाबी पर बहुत खुश हैं। वैज्ञानिक मिशन के अधिकांश उद्देश्य पूरे होने जा रहे हैं।

India's Chandrayaan-3 conquers the south pole of the moon

K N Pandita

Referring to ISRO's failure to soft-land Chandrayaan-2 in 2019, Prime Minister Modi said that failure always teaches us how to succeed. While attending the BRICS summit in South Africa, the Prime Minister took off a few minutes to watch the thrilling closing scene of the successful soft-landing of Chandrayaan-3. As the machine touched the surface after 40 days of journey to escape the earth's gravitation and enter the moon's gravitational pull, the entire team of Indian scientists at ISRO was agog with joy. The Prime Minister addressed them extolling their capability, dedication and sense of service to the nation

India has become the fourth nation in the world that has successfully soft-landed their satellites on the surface of the moon. However, she is the first among the four that have planted the tri-colour on the southern pole of the moon, generally considered difficult and forbidding because of the existence of brig craters on the moon and its extremely cold climate to the tune of -200 degrees Celsius. More than four decades ago, the US satellite had made the maiden landing on the moon but then Washington almost decided not to send a satellite any more to the moon.

Because of the failure of Chandrayaan-2, the entire team of space scientists was rather sceptical about the success of Chandrayaan-3. It is this fear of repetition of failure, that made scientists exceptionally careful in identifying the causes of the failure of earlier efforts and consequently plugging all the loopholes that might have escaped their hawkish eyes while launching the Chandrayaa-3.

This is why despite little scepticism; the scientists were hopeful of their ability to achieve the goal. The entire world was closely watching the journey of Chandrayaan-3 to its destination. The ISRO kept the nation and the world informed of every stage of the long and tedious journey of the satellite. In his short address to the ISRO scientists, PM Modi rightly said that the day will be written in letters of gold in the history of free India. The Indian nation has a right to be proud of the laurels their scientists have won. First, they rejoice in pride that even from the smallest to the biggest component of the Chandrayaan-3, all were of indigenous make thereby giving great credibility to PM Modi's initiative of Make in Bharat and "atamnirbhar Bharat". The success of Chandraan-3 has become a source of inspiration for the entire nation and especially the technology-savvy segment of Indian society that nothing is impossible to achieve if the objective is of universal good and beneficial to all humanity.

The fact is that although the nation is on the right track of development through scientific and technological means we have still to go a long way to become a nation that has banished poverty, ignorance and injustice. We have to remove unacceptable discrimination among people and create the true semblance of Ram Raj. If we make discoveries and inventions, that is fine and desirable but the ultimate objective has to be the welfare of the people of this country.

We have seen a drastic change in India in terms of economy, governance, justice

and development. What we have achieved in the last decade is a strong incentive for our entrepreneurs, engineers, researchers business magnates etc. to explore more avenues of employment, increase our stocks and, above all, lift the standard of living of people in all walks of life. This is the age of science and technology, of honest and fair business, of cooperation and collaboration and not of confrontation.

That is why the Prime Minister said in his message to the ISRO space scientists that today's success brings some responsibility to us that we extend cooperation to other nations in their struggle to ameliorate their standards of living. The benefits of lunar research should not remain confined to India, he exhorted. He went on to say that landing on the moon does not mean we have achieved something and we have no need to do more. He said we are already geared to survey the Solar system and have also the blueprint of humans landing on the moon. India would strongly support lunar tourism when the time comes because the preliminaries that have brought us success are strong incentives to conduct more research in the solar system.

The precision with which the scientists completed the mission also reminds us of the great advancement that ancient Indian astronomy had made in the course of history. Voices have been raised from time to time to add Indian Astronomical science to the curriculum from early classes. While the journey of soft-landing of Chandrayaan-3 was underway, millions of Indians of all faiths attended their worshipping places to pray for the successful landing of the satellite. As soon as the good news of the successful landing was announced, the entire country broke into an unprecedented hilarious mood. Crackers went off, and groups of people thronged the streets and parks to dance to the beat of drums, Merrymaking, dancing in colourful dresses and playing musical instruments, flutes, tabla and harmonium

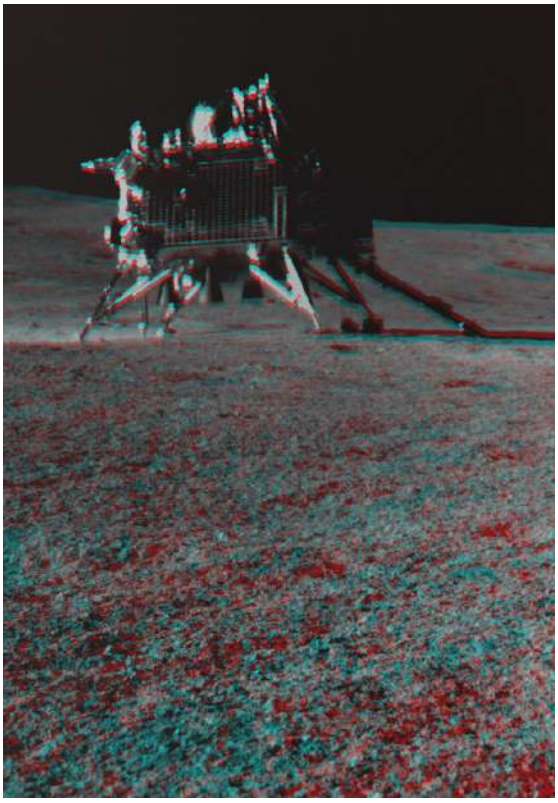

were seen crowding the streets within minutes.There was no major town that did not go colourful. Some said that after the Covid, for the first time true happiness had come to them with this historic event. The soldiers in their barracks and posts danced and raised peals of laughter out of joy and superb achievement. The President, Home Minister and Defence Minister congratulated the scientists and the nation. This was our moment of pride. Dr Jitendra Singh, MOS in PMO, who is also in charge of ISRO, sat with the scientists throughout the anxious moments and gave them moral support.

India has paved the way to achieve a prestigious place among the nations of the world. This is because her fundamental foreign policy is based on the Vedic teaching Vasudhaiva Kutumbakam - the world is my family.

अभाविप की न्याय पद यात्रा

राज्य सरकार से बदतर हालात को ठीक करने की मांग

| अजीत कुमार सिंह |

राजस्थान में व्याप्त भ्रष्टाचार, पेपर लीक, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों के विरुद्ध गहलोत सरकार की उदासीनता को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने 185 किलोमीटर लम्बी पदयात्रा निकाल कर अपना विरोध दर्ज कराया । यात्रा गत 3 अगस्त को करौली से शुरू हुई, जिसका समापन जयपुर स्थित राजस्थान विश्वविद्यालय में 10 अगस्त को हुआ। न्याय हुंकार रैली में बड़ी संख्या में छात्रों के साथ ही स्थानीय जनता ने हिस्सा लिया ।

राजस्थान के करौली से गत 3 अगस्त को शुरू हुई न्याय पदयात्रा कूडगांव, गंगापुर, पिपलाई लालसोट, तुंगा, बस्सी व घाट की घुणी होते हुए जयपुर तक पहुंची। न्याय पद यात्रा में 300 से अधिक छात्र-छात्राओं ने स्थायी रूप से हिस्सा लिया और पदयात्रा करते हुए जयपुर पहुंचे। रास्ते में स्थानीय लोगों ने भी

याज्ञवल्क्य शुक्ला
राष्ट्रीय महामंत्री, अभाविप

राजस्थान की गहलोत सरकार का महिला-युवा विरोधी चरित्र जनता से छुपा नहीं है। विकास के नाम पर सरकार के लोग अपनी निजी संपत्ति को बढ़ा रहे हैं। प्रदेश में हर कोने से दुष्कर्म की दुखद घटनाएं प्रतिदिन सामने आ रहीं हैं और कई मामलों में आरोपी को प्रदेश सरकार का संरक्षण प्राप्त है । अभाविप की 'न्याय हुंकार रैली' ने राजस्थान सरकार की विफलताओं की पोल खोल कर रख दी है ।

पदयात्रा में हिस्सा लिया। रोजाना पांच सौ से अधिक लोगों ने लगातार पैदल चलते हुए 185 किलोमीटर से अधिक की यात्रा पूरी की। जनसभा के बाद शुरू हुई यात्रा को रोकने का भरपूर प्रयास किया, लेकिन पुलिस प्रशासन पद यात्रा को रोकने में असफल रहा। पहले दिन 19 किलोमीटर की यात्रा के बाद रात्रि विश्राम छोटे से कस्बे कूड़गांव में हुआ। दूसरे दिन तेज वर्षा के बीच पदयात्री 18 किलोमीटर की दूरी तय करके गंगापुर सिटी पहुंचे। वर्षा होने बावजूद रास्ते में गांव के लोगों का भरपूर समर्थन पद यात्रियों को मिला। गंगापुर सिटी में आयोजित एक विशाल जनसभा में महिलाओं एवं युवाओं को न्याय दिलाने के लिए अभाविप कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया । गंगापुर सिटी में विश्राम के बाद अगले दिन पुनः तेज वर्षा में पद यात्री पिपलाई के लिए रवाना हो गए । रात्रि में पद यात्री लालसोट पहुंचे। लालसोट बाजार में आयोजित एक जनसभा को अभाविप जयपुर प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री ने संबोधित करते हुए महिला उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, पेपर लीक सहित अन्य गंभीर मुद्दों पर उपस्थित लोगों का जन जागरण किया।

यात्रा के चौथे दिन पांव में पड़े छालों और उससे पैदा हुए कष्ट के बावजूद पद यात्रियों ने 35 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय थी। लालसोट से तुंगा तक की इस यात्रा में आम लोगों की सहभागिता भी रही। तुंगा से पद यात्री सुबह देर से रवाना हुए । उत्साह से भरपूर पदयात्री शाम होते-होते बस्सी तक पहुंच गए। यहां भी एक जनसभा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने राज्य सरकार की असफल नीतियों को सामने रखा । जयपुर पहुंचने से पहले न्याय पदयात्रा को पुलिस प्रशासन ने कभी अनुमति के नाम पर तो कभी अनुशासन के नाम रोकने का प्रयास किया। लेकिन पदयात्री बस्सी से निकल पड़े। बस्सी से घाट की घुणी की ओर यात्रा में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल भी सहभागी बने ।

हुश्यार मीणा
राष्ट्रीय मंत्री, अभाविप

प्रदेश सरकार सत्ता के नशे में चूर है। दुष्कर्म जैसे अमानवीय अपराधों की प्रदेश में बढ़ रही संख्या प्रदेश सरकार की विफलताओं की देन है। आज प्रदेश में युवा वर्ग रोज़गार की समस्या से व्यथित है, जिन रिक्त पदों पर भर्तियां पूर्ण भी होती हैं तो वहां प्रतिभावान अभ्यर्थियों की जगह सरकार अपने ही लोगों का भ्रष्ट ढंग से नियोजन करा रही है। न्याय यात्रा ने सरकार की नींदें उड़ा दी है ।

आशीष चौहान
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अभाविप

आज राजस्थान प्रदेश का युवा त्रस्त है, पीड़ा में है। प्रदेश सरकार के शासन में युवा अपने आप को कमजोर पा रहा है। करौली सहित विभिन्न स्थानों पर प्रदेश में महिलाओं के साथ हुए जघन्य अपराध पीड़ा देने वाले हैं। राजस्थान का नेतृत्व प्रतियोगी परीक्षाओं में घोटाले करता है । राजस्थान रेप में नंबर वन है । यहां की सरकार वीरगति प्राप्त सैनिकों की वीरांगनाओं पर लाठी चार्ज करती है।

10 अगस्त को पद यात्री घाट की घुणी से जयपुर स्थित राजस्थान विश्वविद्यालय की ओर चल पड़े । रास्ते में पुलिस प्रशासन ने पुनः यात्रा को रोकने की असफल कोशिश की परंतु पदयात्री राजापार्क होते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय स्थित घूमर पंडाल पहुंचे। यात्रा के समापन अवसर पर राजस्थान विश्वविद्यालय में दस हजार से अधिक विद्यार्थियों के बीच न्याय हुंकार सभा का आयोजन किया गया । सभा में अभाविप नेताओं ने राज्य सरकार से कई मांगें करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार ने अभाविप की न्यायोचित मांगों पर यदि ध्यान नहीं दिया, तो अभाविप सभी जिलों में सरकार के विरुद्ध मोर्चा खोलने के लिए बाध्य हो जाएगी ।

अभाविप की राजस्थान सरकार से मांग

- प्रदेश में कानून-व्यवस्था की स्थिति में सुधार लाया जाए । बलात्कारियों के विरुद्ध सख्त कानून बनाकर ऐसे मामलों की सुनवाई फास्टट्रैक कोर्ट में कराई जाए ।
- पीड़ित महिलाओं को राहत पैकेज दिया जाए । विश्वविद्यालय व कॉलेजों में महिला सुरक्षा बढ़ने के साथ ही सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं ।
- सभी विवादास्पद प्रतियोगी परीक्षाओं की सीबीआई जांच कराई जाए । विवादित परीक्षाओं को इसी वर्ष पुनः कराया जाए ।
- राजस्थान लोक सेवा आयोग सहित अन्य सरकारी संवैधानिक संस्थाओं के प्रमुख पद पर राजनीतिक व्यक्तियों की नियुक्ति बंद की जाए ।
- पेपर लीक के सभी आरोपियों के विरुद्ध कठोर करवाई की जाए और पीड़ित विद्यार्थियों को मुआवजा दिया जाए ।

प्रफुल्ल आकांत
राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री, अभाविप

राजस्थान में अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने वाले छात्रों को राजस्थान सरकार पुलिसिया दमन से डराने का प्रयास कर रही है । राजस्थान में अपराध की घटनाएं डरावनी हैं। राजस्थान की विफल सरकार से प्रदेश को मुक्ति दिलाने का संकल्प प्रदेश का हर युवा ले रहा है । न्याय पदयात्रा ने राजस्थान में सरकार के अन्याय के विरुद्ध बिगुल फूंक दिया है ।

शौर्य जैमन
जयपुर प्रान्त मंत्री, अभाविप

जो प्रदेश कभी 'बलिदानियों और शूरवीरों की भूमि' रहा है, वहीं से आज सबसे ज्यादा बलात्कार की घटनाएं सामने आ रही हैं। राजस्थान आज 'पेपर-लीक प्रदेश' बन चुका है और वर्ष में औसतन तीन बार पेपर लीक की घटना सामने आती है। आम आदमियों की आवाजों को इस प्रकार दबाया जाएगा तो वह सरकार को उखाड़ फेंकने का काम करेंगे।

जिम्मेदार नागरिक बनने का पहला कदम है छात्रसंघ चुनाव

| साकेत बहुगुणा |

हमारे देश में कई बार यह चर्चा की जाती है कि छात्रसंघ चुनाव क्यों कराए जाते हैं? यह चुनाव आवश्यक हैं या व्यर्थ? छात्र विश्वविद्यालयों में पढ़ने जाते हैं या राजनीति करने? छात्रसंघ चुनावों से पढ़ाई में व्यवधान क्यों होने दिया जाता है? ऐसे सवाल उठाने वाले एक वृहत्त स्तर पर छात्रसंघ के महत्व, उपयोगिता और उसके गौरवशाली इतिहास से अनभिज्ञ हैं। वास्तव में, विद्यार्थियों के मध्य अपने नेतृत्वकर्ता चुनने की परंपरा हमारे देश की समृद्ध लोकतान्त्रिक व्यवस्था की एक सशक्त कड़ी है।

छात्रसंघ चुनाव में कॉलेज विद्यार्थियों का लोकतंत्र से पहला परिचय होता है। इन चुनावों में भाग लेने से विद्यार्थियों में लोकतान्त्रिक प्रक्रिया का परिचय तो होता ही है, अनेक विषयों पर एक दृष्टिकोण का निर्माण भी होता है। अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ती है और अपने कर्तव्य का बोध भी होता है। उन्हें वोट डालकर अपने सक्षम और सशक्त प्रतिनिधि चुनने के कर्तव्य का बोध होता है। सभी लोगों की तरह विद्यार्थियों की भी अनेक समस्याएं होती हैं, उन्हें समाधान की ओर ले जाने का एक माध्यम है छात्रसंघ।

छात्रसंघ विद्यार्थियों में छात्रहित हेतु संघर्ष करने की प्रवृत्ति का निर्माण करता है, अपने आस-पास हो रहे अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का संकल्प विकसित करता है और स्वयं से ऊपर उठकर अपने समाज और राष्ट्र के बारे में भी सोचने हेतु प्रेरित करता है। छात्रसंघ चुनावों की जिम्मेदार और जागरूक मतदाता के निर्माण में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः सामान्य विद्यार्थियों हेतु एक जिम्मेदार नागरिक बनने की ओर पहला कदम है छात्रसंघ चुनाव।

ऐसा कहा जाता है कि छात्रसंघ चुनावों में बहुत शोरगुल होता है, बहुत कागज बर्बाद किया जाता है, कुछ छात्रनेता उपयुक्त व्यवहार नहीं करते हैं, इनमें विद्यार्थियों का समय बर्बाद होता है, पढ़ाई बाधित होती है और छात्रों के बीच अत्यधिक वाद विवाद होता है। कभी-कभी छात्रों के बीच में झगड़े भी होते हैं और मारपीट तक हो जाती है। लेकिन यह नकारात्मक दृष्टिकोण है। वाद-विवाद तो लोकसभा और विधानसभा के चुनावों में भी होता है, उनमें भी बहुत पैसा खर्च किया जाता है और बहुत समय लगता है। देशभर में चुनावी रैलियों और अन्य कार्यक्रमों में समय और धन लगता है। तो क्या यह चुनाव बंद कर दिए जाएं? क्या इन चुनावों से कोई लाभ नहीं? फिर हम अपने प्रतिनिधि चुनकर सरकार कैसे बनाएंगे? अगर राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर पर चुनाव आवश्यक हैं, अपने प्रतिनिधि चुनकर सरकार बनाना आवश्यक है तो विद्यार्थियों के लिए भी अपने नेता चुनना, अपने मुद्दों को आगे बढ़ाना गलत कैसे हो सकता है?

कुछ लोग कहते हैं कि यह बच्चे हैं, इनका काम सिर्फ पढ़ाई करना है, राजनीति करना नहीं। इसलिए छात्रसंघ चुनाव नहीं होने चाहिए। यह लोग भूल जाते हैं कि विश्वविद्यालयों में आने वाले "बच्चे" कम से कम 17 साल के तो होते ही हैं, अधिकतर 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके होते हैं। जब इन्हें लोकसभा और विधानसभा चुनाव में वोट डालने का अधिकार प्राप्त है तो क्या यह विश्वविद्यालय स्तर पर अपने प्रतिनिधि चुनने में सक्षम नहीं हैं? अगर यह बच्चे नादान हैं तो लोकसभा, विधानसभा और नगर निकाय/पंचायत चुनावों में अपने वोट का सही उपयोग कैसे करते होंगे?

इस मुद्दे पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का वर्षों से स्पष्ट मत रहा है- "छात्र कल का नहीं, आज का नागरिक है"। और जब हम आज के नागरिक हैं तो लोकतान्त्रिक व्यवस्था में अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार भी हमारे पास होना चाहिए। राष्ट्रीय तथा सामाजिक विषयों की समझ विकसित होगी तो राष्ट्रीय और प्रादेशिक चुनावों में भी विद्यार्थी अपने मत का सही प्रयोग करेंगे और इससे देश को सही नेतृत्व मिलेगा। अतः छात्रसंघ चुनाव का विद्यार्थियों में राष्ट्रीय व सामाजिक विषयों की समझ विकसित करने की दृष्टि से देश के विकास में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है।

यदि हम लोकतान्त्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाना चाहते हैं तो बदलाव मूलभूत स्तर पर होने चाहिए। युवा जागरूक होगा और उनमें जिम्मेदार नेतृत्व विकसित होगा तो देश को आने वाले समय में जिम्मेदार नेता मिलेंगे। नेतृत्वकर्ताओं की केवल राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं, अपितु समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता है। हिन्दी भाषा में नेता का अर्थ केवल राजनीतिक क्षेत्र के नेता के परिप्रेक्ष्य में लिया जाता है, जबकि अंग्रेजी के leader शब्द का उपयोग समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है, हमें भी इस संकुचित मानसिकता से ऊपर उठकर सभी क्षेत्रों में leader विकसित करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय स्तर पर भी भ्रष्ट नेता होते हैं, परिवारवाद होता है, क्षेत्रवाद और जातिवाद होता है। हां, छात्रसंघ चुनावों में धनबल, बाहुबल और जातिवाद समाप्त हो, इस दिशा में ठोस कदम भी उठाए जाने की आवश्यकता है। उसी प्रकार जिस प्रकार राष्ट्रीय या प्रादेशिक चुनावों में भी अनेक सुधारों की आवश्यकता है।

भारत में छात्रसंघों एवं विद्यार्थी संगठनों से अनेक नेतृत्वकर्ता निकले हैं, जिनमें से कई राष्ट्रीय स्तर सामाजिक, राजनीतिक व अन्य क्षेत्रों में देश का नेतृत्व भी कर रहे हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन में और उनकी वृत्तिक-यात्रा में छात्रसंघ का एक बड़ा योगदान उनमें से अधिकतर लोग व्यक्त करते रहते हैं।

आज देश के अधिकतर विश्वविद्यालयों में छात्रसंघ चुनाव नहीं होते हैं और बहुत ही कम स्थानों पर प्रत्यक्ष प्रणाली से होते हैं। कई राज्य सरकारें छात्रसंघ चुनाव करवाने से डरती हैं और येन-केन-प्रकारेण इन्हें रोकने या टालने के षड्यन्त्र करती हैं। एक स्वस्थ लोकतंत्र हेतु यह ठीक नहीं है। देश के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रसंघ चुनाव होने चाहिए। उनकी व्यवस्थाएं और प्रतिमान भिन्न-भिन्न हो सकते हैं किन्तु यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उच्च शिक्षा में पहुंचकर विद्यार्थियों का छात्रसंघ-रूपी लोकतंत्र की पहली पाठशाला से भी परिचय होना ही चाहिए।

बदलाव

'एक देश-एक चुनाव' नीति का अभाविप ने स्वागत किया

केंद्र सरकार द्वारा समिति गठित किए जाने के कदम का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने स्वागत किया है। अभाविप ने कहा है कि 'एक देश-एक चुनाव' की संभावनाओं पर विचार करने के लिए समिति का गठन एक महत्वपूर्ण कदम है और अभाविप इससे अत्यंत आशान्वित है। वर्तमान में देश में चुनाव सुधारों की दिशा में विभिन्न कदम उठाए जाने आवश्यक हैं, जिससे लोकतंत्र के इस महत्वपूर्ण पक्ष में परिस्थितिजन्य दोषों को दूर किया जा सके।

अभाविप ने समय-समय पर देश की चुनाव व्यवस्था के विभिन्न पक्षों जैसे मताधिकार के प्रयोग, धनबल-बाहुबल को नकारने, सभी वर्गों की चुनावी प्रतिनिधित्व में उचित सहभागिता, चुनावों में भ्रष्टाचार को खत्म करने जैसे विषयों पर उचित विमर्श के उपरांत, देश के विभिन्न शैक्षणिक परिसरों में युवाओं के मध्य चुनाव सुधारों के लिए संवाद हेतु संगोष्ठियां व अन्य रचनात्मक प्रयोग किए। 2013 में परिषद की नागपुर में हुई राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद में चुनाव सुधार के लिए नीतिगत निर्णय लेने का आह्वान किया गया था।

अभाविप का कहना है कि देश को स्वाधीनता मिलने के उपरांत शुरुआत में 'एक देश-एक चुनाव' की स्थिति थी और कई विधानसभा व लोकसभा चुनाव साथ हुए। लेकिन विभिन्न कारणों से यह क्रम टूट गया और धीरे-धीरे यह स्थिति बन गई कि देश हर समय चुनावी मोड में रहने लगा। इसके कारण कई तरह के निर्णय भी प्रभावित होते हैं, जोकि देश के लिए अहितकारी है। 'एक देश-एक चुनाव' वर्तमान समय में चुनाव सुधारों की दिशा में अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस विषय में सभी हितधारकों से उचित राय लेकर चुनाव सुधारों की दिशा में आगे बढ़ना हितकारी है। देश की चुनाव व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन आना चाहिए I चुनाव सुधारों से भ्रष्टाचार को रोकने में सहायता मिलेगी व विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

WOSY held International Conference on "Solidarity for Sustainability"

An International Conference on "Solidarity for Sustainability" was organised by World Organisation of Students and Youth in association with RIS New Delhi on 11th August 2023 at the India Habitat Centre, New Delhi. In the inaugural session of the conference, the keynote speaker Sunil Ambekar, Akhil Bharatiya Prachar Pramukh of RSS highlighted, the important issues related to sustainability & said that world has to think together for sustainable goal. He also said that sustainability is an essential aspect of Bhartiya Tradition and, its eternal values of human existence could play an important role in finding solutions related to contemporary environmental challenges.

Sunil Ambekar said that the Vedic texts tell us that we are all interconnected in the world and when there are relationships with each other, everyone has responsibilities. This feeling stems from the family institution of India. He said that where thoughts are positive, humanity also takes birth. Discussing the World Organisation of Students and Youth, he said that it is a platform which can translate thoughts into practical form. There is no doubt that this platform will play an important role in the future through research and reports. The conference also marked the release of a book titled, 'Solidarity for Sustainability', alongside the inauguration of WOSY's updated website.

In his virtual address, India's External Affairs Minister Dr. S. Jaishankar also stated that the challenges related to sustainability should be solved by working collectively. He also threw light on environment friendly lifestyle and said India's experiences can provide possible solutions for global issues on sustainability. Special guest of the inaugural session Prof. Yogesh Singh, Vice Chancellor Delhi University laid emphasis on the Indic values of sustainability with respect to possible solutions of the environmental issues like climate change etc.

In his opening remark, Prof. Sachin Chaturvedi, Director General of RIS, briefed about the importance of eco sensitive cultural values in economy. In the welcome address, Nitin Sharma Chairperson WOSY mentioned about the Importance of the program theme -"Solidarity for Sustainability". The plenary session of the conference deliberated upon the issues related to G-20 and voice of Global South in context of their sustainable development, human well-being and cultural sensibilities.

The conference was divided into three plenary sessions, each addressing distinct aspects of sustainability. Plenary Session I focused on the G20 and the Voice of the Global South, with speakers including H.E. Dr. Shankar P. Sharma, Ambassador of Nepal to India; H.E. Shalar Geldynazarov, Turkmenistan Ambassador to India; and Ambassador Bizunesh Meseret, Deputy Head of Mission of Ethiopia.

Plenary Session II centered on Sustainable Development and Human Well-being. Dr. Abhishek Tandon, President of Delhi ABVP & Associate Professor, Delhi University, moderated the session. The speakers included Manish Jaikrisna, MD of Vision Box Asia Pacific, Middle East, and Africa; Mr. Vinit Kumar, Chairman of the Indigo Group of Companies; and Mr. Punit Gupta, Founder & CEO at Clensta, New Delhi.

Plenary Session III addressed the intersection of Culture and Sustainability. Moderated by Vaibhav Dange, Advisor at the National Highways Authority of India, Ministry of Road Transport & Highways, and Member of the Board of Governors, IIM Nagpur, the session featured Prof. Kamal Kishore Pant, Director of IIT Roorkee, as the speaker.

The conference ended with a valedictory address by Ashish Chauhan, National Organising Secretary of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad. Shubham Goyal, Secretary General of WOSY, expressed gratitude in the vote of thanks. ■

(Rashtriya Chatrashakti Team)

जानकारी

माता-पिता की भी लगेगी क्लास

बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाने भर से माता-पिता और अभिभावकों की जिम्मेदारी अब पूरी नहीं होगी, बल्कि उन्हें बच्चों के समग्र विकास के लिए स्कूलों के साथ जुड़कर काम करना होगा।स्कूलों के लिए तैयार किए गए नए नेशनल कैरीकुलम फ्रेमवर्क (एनसीएफ) ने बच्चों के पढ़ने-पढ़ाने को लेकर एक रोडमैप तैयार किया है, जिसमें बच्चों के स्कूल में दाखिला लेते समय माता-पिता और अभिभावकों की ओरिएंटेशन क्लास आयोजित की जाएगी, जहां उन्हें घरों में बच्चों को पढ़ाई के लिए बेहतर माहौल देने सहित स्कूलों के साथ जुड़कर बच्चों के विकास पर कैसे नजर रखना है आदि से जुड़ी जानकारियां दी जाएगी। स्कूलों के लिए तैयार किए गए एनसीएफ में पहली बार पाठ्यक्रम के साथ बच्चों से जुड़े उन पहलुओं पर भी ध्यान दिया गया है, जो बच्चों के समग्र विकास के लिए जरूरी होते हैं। इनमें स्कूल के साथ घर-परिवार और आस-पास के माहौल को भी पढ़ने-पढ़ाने लायक बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि बच्चे स्कूल के बाद यदि कहीं सबसे ज्यादा समय रहते है, तो उनका घर, परिवार व मोहल्ला होता है। ऐसे में यदि वहां का माहौल ठीक नहीं तो स्कूल चाहकर भी उसके प्रदर्शन को बेहतर नहीं बना पाएगा। इसे लेकर जिन अहम कदमों की सिफारिश की गई है, उनमें ओरिएंटेशन क्लास, माता-पिता और शिक्षकों की बैठक, माता-पिता के संवाद, स्कूल प्रबंधन समिति गठित करने, बाल मेला, प्रदर्शनी, स्वच्छता और स्वास्थ्य शिविर जैसी गतिविधियों को चलाने पर जोर दिया गया है। साथ ही स्कूलों में आयोजित होने प्रत्येक कार्यक्रमों में अभिभावकों के साथ ही समाज के जुड़े लोगों की भागीदारी सुनिश्चित कराई जाएगी।

जादवपुर विश्वविद्यालय में छात्र की मौत
शांतिपूर्ण प्रदर्शन करते अभाविप नेता गिरफ्तार

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता स्थित जादवपुर विश्वविद्यालय में 17 वर्षीय नवागंतुक छात्र स्वप्नदीप कुंडू की रहस्यमय मौत के मामले में निष्पक्ष जांच करके दोषियों को सजा देने और ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने की मांग कर रहे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) कार्यकर्ताओं को पुलिस ने बर्बरतापूर्ण कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार कर लिया, जिन्हें बाद में न्यायालय ने जमानत पर रिहा कर दिया।

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि राज्य सरकार गिरफ्तार किए गए अभाविप कार्यकर्ताओं की न्यायिक हिरासत की मांग कर रही थी, जिसे न्यायालय ने नकार दिया। यह आम छात्र-छात्राओं की बड़ी जीत है तथा राज्य की अधिनायकवादी सरकार को कड़ा जवाब है। गिरफ्तार किए गए अभाविप कार्यकर्ताओं के साथ पुलिस ने हिरासत अवधि में यातनापूर्ण व्यवहार किया, यह निंदनीय तथा दुर्भाग्यपूर्ण है। राज्य सरकार की यह कार्रवाई राजनीति प्रेरित है, लेकिन वह सरकार की विफलताओं के विरोध में उठ रही आवाज़ को दबा नहीं पाएगी।

जादवपुर विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले 17 वर्षीय नवागंतुक छात्र स्वप्नदीप कुंडू की गत अगस्त माह में रहस्यमय ढंग से मौत हो गयी थी। विश्वविद्यालय के मुख्य छात्रावास के बाहर उसे गंभीर रूप से घायल स्थिति में पाया गया, जिसे निकट के अस्पताल में भर्ती कराया गया। लेकिन उसकी मौत हो गई। बाद में उसकी मौत का कारण छात्रावास की दूसरी मंजिल की बालकनी से गिरना बताया गया। मामले की जांच के दौरान पुलिस ने कई छात्रों और पूर्व छात्रों को गिरफ्तार कर लिया, जिन पर छात्रों ने रैगिंग के साथ ही अन्य तरीकों से स्वप्नदीप कुंडू को प्रताड़ित करने का आरोप लगाया था।

घटना के बाद जादवपुर विश्वविद्यालय में रैगिंग के विरुद्ध भारी आक्रोश पैदा हुआ। घटना

की निष्पक्ष जांच, दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई और विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं की सुरक्षा एवं अन्य व्यवस्थाओं की मांग को लेकर अभाविप ने 'जादवपुर विश्वविद्यालय बचाओ' शांतिपूर्ण रैली का आह्वान किया था। रैली में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। कोलकाता में हुए शांतिपूर्ण प्रदर्शन में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल, राष्ट्रीय मंत्री बिराज विश्वास सहित कई छात्र-छात्राओं को पुलिस ने कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार कर लिया और उनपर मुकदमा दर्ज किया गया।

जमानत मिलने के बाद अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि पश्चिम बंगाल सरकार की तानाशाही से प्रदेश के विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों का भविष्य संकट में आ गया है। रैगिंग के विरोध में आवाज़ उठाने वाले छात्रों पर मुकदमे कायम किए जा रहे हैं। राज्य सरकार पूरी ताकत से प्रोपेगंडा फैलाकर गंभीर अपराधों से ध्यान भटकाने की कोशिश करती आ रही है। लेकिन अभाविप देश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में जादवपुर विश्वविद्यालय की घटना के विरोध में प्रदर्शन करते हुए ममता बनर्जी की अधिनायकवादी प्रवृत्ति व छात्र विरोधी सरकार का चरित्र उजागर करेगी।

अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री अंकिता पवार ने भी जादवपुर विश्वविद्यालय में हुई घटना को अत्यंत जघन्य कृत्य बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षा परिसर छात्रों के लिए सुरक्षित होने चाहिए और उन्हें अपराधियों का अड्डा नहीं बनने देना चाहिए। बंगाल सरकार अपनी विफलताओं की आलोचना करने वालों को प्रताड़ित करके चुप कराने में जुटी है, लेकिन छात्र इसका पुरजोर जवाब देकर अपने अधिकारों की रक्षा करेगी। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

जानकारी

एमबीबीएस में अधिकतम 150 सीटें

भारत में शुरू होने वाले नए मेडिकल कालेजों में बैचलर ऑफ मेडिसिन एंड बैचलर ऑफ सर्जरी (एमबीबीएस) की अधिकतम 150 सीटें होंगी। यह नियम 2024-25 शैक्षणिक सत्र से स्थापित होने वाले कालेजों पर लागू होंगे। वर्तमान में एमबीबीएस की अधिकतम सीमा 250 सीट की है। इसके साथ ही मेडिकल कालेजों के लिए संबंधित राज्य या केंद्रशासित प्रदेश में 10 लाख जनसंख्या पर 100 एमबीबीएस सीटों के अनुपात का भी पालन करना अनिवार्य होगा अर्थात प्रत्येक राज्य में प्रति 10 लाख जनसंख्या पर एमबीबीएस सीटों की संख्या 100 से अधिक नहीं हो सकती। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) ने नए मेडिकल संस्थानों की स्थापना, नए चिकित्सा पाठ्यक्रमों का प्रारम्भ, मौजूदा पाठ्यक्रमों के लिए सीटों की वृद्धि और मूल्यांकन और रेटिंग नियम के तहत स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए जारी अपने दिशानिर्देश में कहा है कि मेडिकल कालेज में प्रवेश के लिए कोई भी अतिरिक्त सीट कोटा उस कालेज में एडमिशन के लिए मंजूर की गई सीटों की संख्या के भीतर होगा। इसके साथ ही जिन कालेजों ने शैक्षणिक वर्ष 2023-24 के लिए बढ़ी हुई सीटों के लिए आवेदन किया है, लेकिन सीटें नहीं बढ़ाई गईं, वह केवल वर्ष 2024- 25 में एक बार के लिए कुल 200 या 250 सीटों की मांग सकते हैं, जो उनके पिछले आवेदन में थी। वर्ष 2023-24 के बाद नए मेडिकल कालेज शुरू करने की अनुमति पत्र केवल 50/100/150 सीटों के लिए जारी किया जाएगा। इसके साथ ही नए मेडिकल कालेज के लिए नई शर्तें निर्धारित की गई हैं, जिनका अनुपालन करना अनिवार्य होगा।

Karnataka govt. has no valid reason to scrap NEP: ABVP

The Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad has launched a state-wide protest on 24 august in protest against the Karnataka state government's decision to cancel the National Education Policy in the state from next year. As a part of this, strong protests were held at Tumkuru Unit of ABVP on 24 august morning.

Karnataka government has decided to scrap the National Education Policy (NEP) without any valid reason and has thus put the future of students at stake, said Akhila Bharatiya Vidyarthi Parishat's Dakshina Karnatka State Secretary Premashree Jodidhar on August 24.

Addressing a gathering at a protest organised by the ABVP at Tumkuru to condemn the State government's decision,State Secretary Premashree Jodidhar said that the government decided to scrap the NEP without consulting the stakeholders and students. "They decided to scrap NEP as the (Congress) party had announced it in its election manifesto. Strangely, the government announced the decision and then called a meeting of Vice Chancellors to get an opinion on NEP," he said.

The NEP was brought out by the Union government to meet the changing needs of education of the present day youth. "We are not the same as our ancestors. We need skill-based education and also facility of multiple entry and exit in the academic programmes. NEP provides this. Karnataka was the first State to implement it. Instead of going ahead with it, the government decided to scrap it for political reason,"she said, and added that

it is unfortuante that the government has politicised a matter that deals with future of hundreds of youth studying in government and aided colleges in the State.

The state government is only saying that it will scrap the National Education Policy (NEP). But have experts been consulted before canceling this policy? I want to ask a question to the Chief Minister through the Collector that on what basis are you canceling the NEP in the state? And have you explained that to anyone? Have stakeholders including education experts been consulted before revoking the said policy? How fair to cancel this policy for just one specific reason. The National Education Policy is being implemented in the country after in-depth discussion of pros and cons with eminence education experts and respected organizations.

The ABVP Uttar Karnatka state secretary Manikantha Kalasa said by scrapping NEP, the State government has put the future of many undergraduates at stake. The

undergraduates from the State will be found wanting in skills compared to those studying in the Centrally-funded and other private institutions. "If the State government fails to withdraw its decision to scrap NEP, then ABVP will launch a massive agitation across the State," Manikantha Kalasa said.

We are proud that this was first implemented in the state of Karnataka in 2020-21. Now implementation of NEP has started in all colleges and universities. Students are graduating according to the examination. If NEP is cancelled, then what decision will be taken in the case of these students? Has the government considered the students before canceling NEP? There are many burning problems of students today. The state government is turning a blind eye to them. It is not right to insist on scrapping only the National Education Policy. ■

(Rashtriya Chatrashakti Team)

Demand

Urgent Measures Needed to Prevent Student Suicides: ABVP Calls for Strong Action

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad is deeply distressed by the incident of a student's suicide at IIT Delhi. Within two months, this is the second case of a student's suicide at IIT Delhi. The increasing occurrences of student suicides among those preparing for competitive exams and seeking admission to prestigious educational institutions across the country are extremely saddening. Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad urges the central government, state governments, educational institutions, various stakeholders, coaching providers, and society as a whole to immediately take steps toward finding a solution to this significant issue.

It should be taken into consideration that in the city of Kota alone, in the past 8 months, incidents of 23 students committing suicide have come to light. In recent months, concerns about student suicides due to academic pressure and other reasons have consistently emerged in various cities across the country, including central universities, IITs, and other institutions. Strong measures need to be taken to prevent this. In the National Executive Committee Meeting of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad held in Pune in May 2023, ABVP called for the creation of stress-free educational environments and the passage of the proposal titled "Campuses should be Centers for Joyful and Meaningful Student Life" to prioritize the physical and mental well-being of students.

ABVP National General Secretary, Yagyawalkya Shukla, said, "There is an increase in student suicides, which is extremely worrisome and unfortunate. It is necessary to identify the causes of mental pressure on students and take appropriate steps. Every student is unique in their own way, which parents must understand. It is imperative that the government takes immediate and effective measures to prevent the increasing incidents of student suicides. Additionally, other stakeholders in the education sector must come forward to address this serious issue. Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad is starting with the 'Anandmay Sarthak Chhatra Jeevan Abhiyan' to reduce student mental stress and create stress-free environments."

5 अक्टूबर : 500 वीं जयंती पर विशेष

वीरता की प्रतिमान : महारानी दुर्गावती

| अर्पणा चित्रांश |

गोंड साम्राज्य की स्थापना वीर योद्धा यदुराय द्वारा 157 ईसवी में हुई और स्थापना से लेकर 1751 ईसवी तक लगभग 1600 वर्षों तक स्वतंत्र राज्य किया। गोंड साम्राज्य की रानी, रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती देश मनाने जा रहा है I पांच सौ वर्ष बाद भी रानी के साहस और बलिदान की गाथा प्रत्येक भारतवासी के मन में ताजा है।

रानी दुर्गावती का जन्म 5 अक्तूबर' 1524 को कालिंजर में हुआ था। कालिंजर वर्तमान में उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में बांदा जिले के अंतर्गत आता है। वह अपने पिता राजा कीर्तिसिंह चंदेल एवं रानी अंजना की एकमात्र संतान थीं। दुर्गाष्टमी के दिन जन्म होने के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। दुर्गावती बाल्यकाल से ही अपने नाम के अनुरूप बुद्धिमान, साहसी व पराक्रमी होने के साथ सुन्दर, सुशील व विनम्र भी थीं। दुर्गावती ने राजपूत परंपरा के अनुसार तीरंदाजी, घुड़सवारी, तैराकी तथा युद्ध कौशल में प्रवीणता ग्रहण की। समयानुसार उनका विवाह संग्रामसिंह के पुत्र दलपतिशाह के साथ हो गया और दुर्गावती गढ़ा साम्राज्य की रानी दुर्गावती बन गई।

1543 में पिता की मृत्यु के पश्चात दलपतिशाह को उनका उत्तराधिकारी घोषित कर राज्याभिषेक कर दिया गया। दुर्गावती राजकाज में राजा दलपतिशाह का पूर्ण सहयोग करती थीं। उन्होंने अपने राज्य में अनेक निर्माण कार्य करवाए, खेती के लिए बड़े-बड़े बांध बनवाए, नदियों से नहरें निकलवाई, कूप और सरोवर बनवाए। इस प्रकार वह एक आदर्श और वैभवसंपन्न राज्य की आधारशिला रख ही पाए थे कि 1548 में दलपतिशाह का निधन हो गया। पुत्र वीर नारायण की अवस्था, देश की राजनीतिक अनिश्चितता एवं कठिन परिस्थितियों के बावजूद रानी दुर्गावती विचलित नहीं हुईं। उन्होंने वीर नारायण का राजतिलक करवा कर उसे राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया और राज्य संचालन की बागडोर स्वयं संभाल ली। रानी ने सुरक्षा की दृष्टि से सिंगौरगढ़ को छोड़ अपनी राजधानी चौरागढ़ (चौगान) को बनाया, अपने राज्य की सीमाओं को सुदृढ़ किया, राज्य की गुप्तचर व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त किया। उनका राज्य पूर्व से पश्चिम तक तीन सौ मील और उत्तर से दक्षिण तक एक सौ साठ मील के क्षेत्र में फैला हुआ था। राजकाज में व्यस्तता के बावजूद वह अश्वारोहण, शस्त्र संचालन और युद्ध अभ्यास भी निरन्तर करती थीं।

शिलालेखों से पता चलता है कि रानी धार्मिक और दानशील भी थी। वह निर्धन, असहाय तथा अभावग्रस्त लोगों के प्रति अत्यंत संवेदनशील थीं और उन्हें भरपूर दान देती थीं। रानी अपने सहयोगियों का पूरा ध्यान रखती थीं। अपने दीवान आधार सिंह के नाम पर आधारताल और बचपन से साथ रही दासी रामचेरी के नाम पर चेरीताल का निर्माण उन्होंने करवाया। अपने प्रिय हाथी 'सरमन' के नाम पर हाथीताल बनवाकर उन्होंने उसकी स्मृति को स्थायी बना दिया। दुर्गावती का वर्णन करते हुए 'आइने अकबरी' के प्रसिद्ध लेखक अबुल फजल ने लिखा है कि "दुर्गावती के शासनकाल में गोण्डवाना इतना संपन्न था कि प्रजा लगान की अदायगी स्वर्ण मुद्राओं तथा हाथियों द्वारा करती थी"।

मालवा के सुलतान बाज बहादुर ने भी गढ़ा पर दो बार आक्रमण किया। पहली लड़ाई में उसे बुरी तरह पराजित होना पड़ा और दूसरी बार कटंगा घाटी में घमासान युद्ध हुआ, जिसमें बाज बहादुर की सेना बुरी तरह हार गई और बाज बहादुर युद्ध के मैदान से भाग खड़ा हुआ। बाजबहादुर की हार की खबर जब अकबर को लगी तो अकबर ने बाज बहादुर की पत्नी रूपमती को पाने की अभिलाषा में मांडवगढ़ पर आक्रमण कर दिया। बाज बहादुर न तो अपने राज्य की रक्षा करने की स्थिति में था और न ही अपनी पत्नी के सतीत्व की। उसने रानी से गुहार लगाई और अपनी पत्नी को उनके संरक्षण में छोड़ वह अकबर से मुकाबला करने चल पड़ा। परिणाम वही हुआ, बाजबहादुर अकबर की इतनी बड़ी सेना के आगे टिक नहीं पाया। अकबर ने बाजबहादुर के राज्य को अपने अधिकार क्षेत्र में मिला

लिया। अब उसकी साम्राज्यवादी नीति का प्रहार दुर्गावती पर होना निश्चित था। अकबर ने संदेश भिजवाया कि रानी अपने प्रिय हाथी 'सरमन' और उसके मुख्य सलाहकार दीवान आधार सिंह को उसकी सेवा में भेज दे, अन्यथा गढ़ा राज्य पर आक्रमण करके उसे मुगल सल्तनत के अधीन कर लिया जाएगा। इस संदेश के साथ ही एक चरखा भेज कर यह संकेत भी दिया गया था कि अब रानी राजकाज छोड़कर सूत कातने का सुलभ कार्य करे। स्वाभिमानी रानी ने भी अकबर को वीरोचित उत्तर भेजा "'गढ़ा मेरा राज्य है, मेरे जीते जी उस पर कोई अधिकार नहीं कर सकता।" साथ ही चरखे के जवाब में रानी ने सोने का एक पींजन भेजा जिसका अर्थ था कि यदि स्त्री होने के नाते मेरा काम चरखा चलाना है, तो तुम्हारी योग्यता भी रुई धुनने से अधिक नहीं है।

रानी से ऐसा जबाब पाकर अकबर तिलमिला गया। उसने कारा-मानिकपुर के मुगल सूबेदार आसफ़ खान की सहायता से व्यापारिक संबंधों के बहाने रानी की सेना और खजाने की जानकारी एकत्र कर सीमावर्ती गाँवों पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। दस हजार घुड़सवारों, बारह हजार पैदल सैनिकों और तोपखाने वाली एक बड़ी शाही सेना के साथ आसफ़ खान गढ़ा-कटंगा में चढ़ाई करके दमोह पहुँचा। बहादुर रानी ने परिस्थिति को देखते हुए किले में मौजूद पांच हजार सैनिकों के साथ युद्ध किया। दुर्गावती और आसफ खां के बीच पहला युद्ध सिंगौरगढ़ के बाहरी क्षेत्र काराबाग में हुआ। महारानी स्वयं दोनों हाथों में तलवार धारण कर मुगलों पर सिंहनी के समान टूट पड़ी। महारानी के वीर सैनिकों ने मुगलों को धूल चटा दी, आसफ खां को मैदान छोड़ कर भागना पड़ा। इस पराजय से अकबर जलभुन गया। कुछ समय बाद उसने आसफ खां को और अधिक सैनिक तथा भारी तोपखाने के साथ महारानी को परास्त करने भेजा। इस बार रानी को भी तैयारी करने का अवसर मिल गया था। दूसरा युद्ध सिंगौरगढ़ में और तीसरा गढ़ा में हुआ। चौथे युद्ध के दौरान रानी पहाड़ियों और घने जंगलों को पार करती हुईं नरही नामक एक गांव में पहुंची।

यह रणनीतिक रूप से एक महत्वपूर्ण स्थान था जो एक तरफ़ से ऊंची पहाड़ियों से घिरा हुआ था और दूसरी तरफ़ दो नदियों, नर्मदा और गौर से। इस स्थान में प्रवेश और निकास दोनों ही बहुत कठिन थे। दुर्गावती ने यहां अपनी सेनाओं के साथ मोर्चाबंदी की। रानी कुछ समय तक तो आसफ़ खां को धोखे में रख सकी लेकिन उसके बाद आसफ खां ने रानी का पता लगा लिया और वह नरही पहुंच गया। यह देखकर रानी दुर्गावती ने अपने सेनापतियों की एक बैठक बुलाई और कहा कि उनके लिए अधिक समय तक छिपे रहना संभव नहीं होगा, इसलिए उन्हें लड़ना होगा। साथ में यह भी कहा कि यदि कोई उनके निर्णय से असहमत हो तो उस व्यक्ति को जाने दिया जाए। उनके शब्दों में इतनी ताकत थी कि सभी सैनिकों ने वहीं रुक कर उनके आदेशों का पालन करने का फ़ैसला लिया। रानी मुग़ल सेना को एक बार फिर खदेड़ने में कामयाब रही।

मुग़ल इतनी आसानी से हार मानने वाले नहीं थे। जब प्रत्यक्ष रूप से वह रानी को नहीं हरा पाए तो उन्होंने धोखे का रास्ता अपनाया। रात्रि में विश्राम कर रहे सैनिकों पर आसफ खां ने आक्रमण कर दिया। रानी के सैनिक भारी संख्या में मारे गए। रानी ने फिर भी हार नहीं मानी और अपनी बची हुई सेना के साथ मुग़ल सेना का भरपूर प्रतिरोध किया। रानी युद्ध करते हुए नरही नाले के पास पहुंच गयी। वह नाला पार करना चाहती थी लेकिन आसफ खां ने नाले पर बना बांध तोड़ दिया। इससे पहले कि रानी कुछ कर पाती एक तीर आकर रानी की आंख में लगा और दूसरा गर्दन पर। रक्तरंजित रानी फिर भी युद्ध करती रही, युद्ध करते-करते मूर्छित हो हाथी से नीचे गिर गयी। रानी के गिरने से रानी के सैनिक हतोत्साहित हो गए और पासा पलट गया। होश में आने पर रानी को अपनी हार निश्चित लगने लगी। रानी ने अपना संकल्प दुहराते हुए कहा "विजय नहीं तो क्या हुआ, बलिदान तो संभव है" और अपनी कटार निकाल अपने वक्षस्थल में भोंक ली। रणभूमि में ही रानी की चिता सजाई गई। उस स्थान का नाम आज बरेला है, जो मंडला रोड पर स्थित है, वहीं रानी की समाधि बनी हुई है।

रानी दुर्गावती के सम्मान में 1983 में जबलपुर विश्वविद्यालय का नाम बदलकर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय कर दिया गया था। केंद्र सरकार ने 24 जून 1988 को रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर एक डाक टिकट जारी किया। जबलपुर में स्थित संग्रहालय का नाम भी रानी दुर्गावती के नाम पर रखा गया। मंडला जिले के शासकीय महाविद्यालय का नाम भी रानी दुर्गावती के नाम पर ही है। अनेक जिलों में रानी दुर्गावती की प्रतिमाएं हमें उनके संघर्षपूर्ण जीवन और बलिदान की याद दिलाती रहतीं हैं।

छत्तीसगढ़ में दुष्कर्म के विरोध में अभाविप का प्रदर्शन

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में मानवता को शर्मसार करने वाली घटना घटित हुई। पीड़ित दोनों बहनें महासमुंद से भाई को राखी बांधकर लौट रही थीं। आरोपियों ने पहले युवतियों से छेड़छाड़ की और फिर दुष्कर्म। युवतियों के साथ आ रहे युवक के साथ मारपीट भी की गई। घटना के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने प्रदेश के सभी जिला केंद्रों में प्रदेश में बिगड़ती कानून-व्यवस्था को लेकर विरोध-प्रदर्शन करते हुए प्रदेश सरकार का पुतला दहन किया ।

जानकारी के अनुसार घटना 30 अगस्त को मंदिर हसौद थाना क्षेत्र में रिम्स कॉलेज के पास हुई। रात करीब 1 बजे पीड़ित मंदिर हसौद थाना पहुंचे। यहां पीड़ित युवती ने रिपोर्ट लिखाई। रिपोर्ट में बताया कि वह अपने परिचित युवक और छोटी बहन के साथ राखी का पर्व मनाकर लौट रही थी। तीनों लोग एक स्कूटी पर भानसोज के रास्ते रायपुर वापस आ रहे थे। इस बीच सड़क पर बाइक पर सवार तीन युवकों ने उन्हें रोक लिया । डरा-धमकाकर उनके मोबाइल और पैसे लूट लिए गए । इसके बाद चार बाइक पर और लड़के भी आ गए। वह सब उन्हें जान से मारने की धमकी देकर कुछ दूर ले गए और सामूहिक बलात्कार करके सभी भाग खड़े हुए ।

घटना के बाद पूरे प्रदेश में हड़कंप मच गया। बलात्कार की घटना के विरोध में अभाविप ने पूरे प्रदेश में राज्य सरकार का पुतला दहन कर विरोध किया। अभाविप ने कहा कि रक्षाबंधन के पर्व पर भाइयों को राखी बांधकर लौट रही दो सगी बहनों के साथ राजधानी रायपुर से लगे मंदिर हसौद में हुई घटना मानवता को शर्मसार करने वाली है। प्रदेश के कई क्षेत्रों कवर्धा, महासमुंद, रायगढ़, कांकेर, सूरजपुर सहित विभिन्न स्थानों में महिलाओं के साथ होने वाली शर्मनाक घटना से छात्रों के साथ ही समाज के सभी वर्गों में आक्रोश है । अभाविप के प्रदेश मंत्री मनोज वैष्णव के अनुसार प्रदेश में कानून-व्यवस्था लगातार बिगड़ती जा रही है। लड़कियों एवं महिलाओं के साथ जिस तरह से अनाचार की घटना हो रही हैं, वह प्रदेश में बदहाल कानून-व्यवस्था को परिलक्षित करती हैं। आवश्यकता यह है कि राज्य सरकार अपनी जिम्मेदारियों को समझे और स्थितियों में सुधार हेतु उचित कदम उठाए । ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

जिलाधिकारी के माध्यम से राज्यपाल को भेजा ज्ञापन

अभाविप ने प्रदेश में बढ़ रही बलात्कार एवं लूट जैसी घटनाओं पर रोक लगाने एवं अपराधियों को कठोर सजा दिलाने के लिए विभिन्न जिलों के जिलाधिकारियों के माध्यम से राज्यपाल को ज्ञापन भी भेजा है। अभाविप ने अपने ज्ञापन में रक्षाबंधन के दिन हुई घटना का हवाला देते हुए कहा कि प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से महिला उत्पीड़न की सामने आ रही घटनाओं के साथ ही अन्य अपराधिक घटनाएं भी बढ़ती जा रही हैं, जिन्हें शासन-प्रशासन भी रोकने में असफल हो रहा है । लगातार हो रही घटनाओं से पता चलता है कि प्रदेश में अपराधियों के हौसले बुलंद हैं और उन्हें कानून का कोई डर नहीं है । ऐसे में राज्यपाल को प्रदेश की बदहाल कानून-व्यवस्था को सही करने, अपराधियों पर त्वरित एवं कठोर कार्रवाई के साथ ही अपराध उन्मूलन हेतु आवश्यक कदम उठाने चाहिए, जिससे आम लोगों को राहत मिल सके ।

परंपरागत खेलों को ओलंपिक में शामिल कराने का अभियान

ग्वालियर में खेलो भारत गतिविधि से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

मध्य प्रदेश स्थित ग्वालियर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने खेलो भारत गतिविधि से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया । इन कार्यक्रमों में खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजयी होने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया । राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर खेलो भारत-ग्वालियर महानगर द्वारा खेल रत्न सम्मान समारोह में 60 खिलाड़ियों, 17 प्रशासको एवं 6 प्रशिक्षकों का सम्मान भी किया गया । गत 29 अगस्त को आयोजित सम्मान समारोह में खेलो भारत गतिविधि के अखिल भारतीय प्रमुख प्रदीप शेखावत, सांसद विवेक सेजवलकर सहित कई अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। सम्मान समारोह में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को गालव उत्कृष्ट खेल रत्न एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

भारतीय परंपरागत खेलों को बढ़ावा देने वाले अभाविप के खेलो भारत कार्यक्रम का आयोजन पूरे देश में किया जा रहे है । खेलो भारत गतिविधि में एक खेल महोत्सव का आयोजन 23 अगस्त को हरदा में किया गया । महोत्सव में हैंडबॉल, वॉलीबॉल, फुटबॉल और खो-खो आदि खेलों की प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ । खेल महोत्सव में आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में 568 छात्र, 356 छात्राएं, 146 प्राध्यापक एवं 463 अन्य संबंधित लोगों के साथ ही 1533 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया । प्रतिभागियों में कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी भी थे। आयोजन में सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए गए । इसी कड़ी में गत 22 जुलाई को ग्वालियर महानगर में जिलास्तरीय मलखम्ब प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं ने अपनी प्रस्तुति दी । प्रतियोगिताओं में दो सगी बहनों सहित 45 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया । प्रतियोगिता के समापन के बाद प्रतिभाशाली छात्रों के उत्साहवर्धन हेतु प्रमाण पत्र एवं मैडल वितरित किए गए।

खेलो भारत गतिविधि के अखिल भारतीय प्रमुख प्रदीप शेखावत ने बताया कि खेलो भारत गतिविधि के माध्यम से देश के सभी विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय में भारत के परंपरागत खेल छात्र-छात्राओं तक पहुंचेंगे । साथ ही इससे परंपरागत खेलों के महत्व को भी बताया जा सकेगा । भारतीय परंपरागत खेलों का पुनरुत्थान एवं ओलंपिक खेलों में भारतीय परंपरागत खेलों को स्थान-इस दृष्टि से खेलो भारत के कार्यकर्ता देश के विभिन्न हिस्सों में खेलो भारत गतिविधि के माध्यम से खेलों का प्रचार प्रसार कर रहे हैं । परंपरागत खेलों में मलखंब, कबड्डी, खो-खो जैसे खेलों रखा गया है । ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

ABVP-JNU Delegation Meets UGC chairman, Demand Ayurveda Biology As Separate Subject

The Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) delegation from Jawaharlal Nehru University (JNU) held a crucial meeting with the Chairman of the University Grants Commission (UGC), advocating for the incorporation of Ayurveda Biology as an independent subject within the UGC-NET/JRF examination. The discussion also revolved around several related aspects of the newly introduced BSc-MSc Ayurveda Biology course at JNU.

The introduction of the BSc Ayurved Biology program in 2020 at JNU aimed to foster a research-focused environment in Ayurvedic Pharmaceutical research. This initiative also sought to establish a synergistic link between traditional Ayurveda and Modern Biology, a crucial approach for comprehensive healthcare solutions. The ABVP-JNU delegation apprised the UGC Chairman of the distinctive attributes of the program. The delegation comprised ABVP-JNU University Unit Secretary Vikas Patel, ABVP Delhi's State Working Committee member Manoj Uniyal, President of the School of Sanskrit and Indic Studies unit of ABVP-JNU, and students of Ayurved Biology Mukund, Gaurav, and Payal.

Vikas Patel, ABVP-JNU University Unit Secretary, emphasized, "The Ayurveda industry has evolved into a multibillion-dollar sector, offering numerous employment opportunities for students. The assurance from the Hon'ble UGC Chairman to consider our request and take appropriate steps is encouraging."

Mukund, President of the School of Sanskrit and Indic Studies unit of ABVP-JNU, and a student of Ayurved Biology, highlighted, "The integrated five-year BSc-MSc course represents a pioneering venture in India, aiming to seamlessly blend the essence of Ayurvedic principles with Modern Biology. Our meeting with the Chairman also underlined the necessity of adding Ayurveda as a distinct subject within the UGC-NET/JRF examination. This would enable students to access junior research fellowships and become eligible to pursue various PhD programs across the nation."

The ABVP-JNU delegation's interaction with the UGC Chairman marks a step toward aligning academic pursuits with the dynamic demands of the healthcare sector. The integration of Ayurvedic knowledge with mainstream academic examinations signifies a significant stride in preserving traditional wisdom while fostering modern advancements. The delegation's proactive engagement with educational authorities showcases a commitment to innovative, holistic learning approaches that cater to both historical traditions and contemporary needs.

(Rashtriya Chatrashakti Team)

मेधा के आधार पर प्रवेश देने की मांग मुख्यमंत्री धामी को अभाविप ने सौंपा ज्ञापन

हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए उत्पन्न हुई समस्याओं के निवारण के लिये अभाविप के एक प्रतिनिधिमंडल ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को एक ज्ञापन सौंपकर विद्यार्थियों की मांगों पर गंभीरतापूर्वक विचार करने का अनुरोध किया है।

अभाविप प्रदेश मंत्री ऋतांशु कण्डारी ने बताया कि हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय एवं विश्वविद्यालय से संबद्ध सभी महाविद्यालयों में प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश हेतु एनटीए द्वारा सीयूसीईटी परीक्षा कराई गई । स्थिति यह रही कि प्रदेश की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अधिकतर छात्रों को यह जानकारी नहीं मिली, जिसके कारण विद्यार्थी परीक्षा का फार्म तक नहीं भर सके । इसके अलावा जिन छात्रों ने फार्म भरे, उन्हें एनटीए द्वारा पर्वतीय क्षेत्र में चार सौ से पांच सौ किलोमीटर दूर या अन्य प्रदेशों में केन्द्र आवंटित किए गए । इससे बहुत सारे छात्र परीक्षा नहीं दे पाए। पूरे प्रदेश के केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं उससे संबद्ध महाविद्यालयों में लगभग 40 प्रतिशत छात्र ही प्रवेश ले पाए हैं । देहरादून जिले की 7600 सीटों में अभी तक मात्र 2815 प्रवेश ही हुए हैं । इसी तरह पौड़ी जिले की 3712 सीटों में अभी तक मात्र 20 ही प्रवेश हो पाए। ऐसे में परिषद ने मांग की है कि छात्रहितों को ध्यान में रखते हुए गढ़वाल विश्वविद्यालय में उत्तराखंड के विद्यार्थियों को प्रवेश में 50 प्रतिशत आरक्षण एवं सभी संबद्ध महाविद्यालयों में मेधा के आधार पर विद्यार्थियों को प्रवेश दिए जाएं।

जानकारी हो कि राज्य के हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल यूनिवर्सिटी से संबद्ध सभी महाविद्यालयों में पिछलों वर्षों की भांति मेधा के आधार पर प्रवेश कराए जाने की मांग को लेकर अभाविप लगातार आंदोलन कर रही है। अभाविप का कहना है कि बिना भौगोलिक परिस्थिति को ध्यान में रखकर बनाए गए प्रवेश के नियम छात्रों और महाविद्यालयों के लिए मुश्किलें खड़ी कर रहे हैं । सभी महाविद्यालयों में अभी भी 60 प्रतिशत से अधिक सीटें खाली पड़ी हुई हैं। विद्यार्थी परिषद का कहना है कि जब तक छात्रों को प्रवेश नहीं मिल जाता, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

अभाविप ने युवाओं को सिखाए उद्योग के गुर

विश्व उद्यमिता दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने उद्यमिता पखवाड़े का आयोजन किया। 21 अगस्त से लेकर 5 सितंबर तक आयोजित उद्यमिता पखवाड़े में देश के अनेक स्थानों पर उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यशाला के माध्यम से विद्यार्थियों एवं युवाओं को उद्यमिता से जुड़े विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया गया। साथ ही जिला उद्योग अधिकारी एवं जिला रोजगार केंद्र से जुड़े अधिकारियों द्वारा विद्यार्थियों को आवश्यक एवं उपयोगी जानकारियां प्रदान की गई।

विश्व में प्रत्येक वर्ष 21 अगस्त का दिन विश्व उद्यमिता दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य युवाओं में रोजगार के एक सशक्त माध्यम के रूप में उद्यमिता की दृष्टि एवं विचार को और नए उद्यमियों को बढ़ावा देना है। इस अवसर पर अभाविप ने भी देश में उद्यमिता पखवाड़े का आयोजन किया। अभाविप ने बताया कि आज समूचा विश्व भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहा है, भारत ने अपने आप को विश्व के समक्ष एक उभरती हुई शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। विद्यार्थी परिषद द्वारा देश भर में आयोजित उद्यमिता पखवाड़े का उद्देश्य सहकारिता स्वरोजगार एवं स्वावलंबन की प्राप्ति करना है।

इसी कड़ी में गोरखपुर महानगर में उद्यमिता पखवाड़े के अंतर्गत आर्यनगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर महिला परास्नातक कॉलेज में आयोजित संगोष्ठी में कॉलेज की प्राचार्या डॉ. रेनु त्रिपाठी ने कहा कि अभाविप द्वारा ऐसे कार्यक्रम का आयोजन प्रशंसनीय है। ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन से उद्यमिता के क्षेत्र को अधिक प्रचार प्रसार तथा बढ़ावा मिलेगा। संगोष्ठी में अभाविप गोरक्ष प्रांत सहमंत्री मयंक कुमार राय ने कहा कि हमें अपने शक्तियों तथा सामर्थ्य को पहचानने की आवश्यता है क्योंकि स्वावलंबी युवा ही नये भारत के निर्माण के द्योतक है। संगोष्ठी में एक युवा उद्यमी अभिषेक कुमार ने बताया कि भारत का प्रत्येक युवा यदि उद्यम को अपनाता है तो बेरोजगारी जैसी चुनौतियां समाप्त हो जायेंगी।

अभाविप ने शिमला में भी संगोष्ठी का आयोजन किया। आर्यावर्त संस्थान में आयोजित संगोष्ठी में अभाविप हिमाचल प्रदेश के प्रदेश संगठन मंत्री गौरव अत्री ने कहा कि भारत दुनिया का सबसे अधिक संख्या वाला देश बन चुका है। सरकार हर व्यक्ति को नौकरी देने में समर्थ नहीं है। ऐसे में युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की आवश्यकता है।

अभाविप ने प्रयागराज में 'बेरोजगार मुक्त भारत का संकल्प' विषय पर 'उद्यमिता सम्मेलन व विचार गोष्ठी' को आयोजन किया। 'उद्यमिता सम्मेलन व विचार गोष्ठी' में वक्ताओं ने कहा कि आज देश हर क्षेत्र में विकास कर नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। युवाओं के बीच एक विमर्श रखा जाता है कि उन्हें रोज़गार नहीं मिल रहा है लेकिन अब नीतिगत बदलाव किए जा रहे हैं और उद्यमिता को बढ़ावा दिया जा रहा है कि युवा खुद रोज़गार प्रदान करने वाले बनकर सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपनी महती भूमिका निभाएंगे।

गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज के प्राचार्य प्रो. आनंद शंकर सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वन के बाद परिसरों में सकारात्मक बदलाव दिखाई दे रहा है। औपनिवेशिक मानसिकता से बाहर आकर हम अपनी समृद्ध संस्कृति और ज्ञान परम्परा आधारित चीजों को अपना रहे है। उद्यमिता जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी युवाओं को बढ़ावा देने का कार्य किया जा रहा है। जानकारी हो कि अभाविप द्वारा देश भर में आयोजित किए गए उद्यमिता पखवाड़े का उद्देश्य सहकारिता, स्वरोजगार एवं स्वावलंबन की प्राप्ति करना है, जिसमें युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उद्यमिता दिवस पखवाड़ा के तहत आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को तकनीक के क्षेत्र में नित नूतन आ रहे बदलाव को ध्यान में रखकर विशेषज्ञों द्वारा नवीन तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डाटा साइंस जैसे विषयों का उद्यमों में उपयोग सम्बन्धी जानकारी से परिचित कराया गया। अभाविप का मानना है कि युवाओं द्वारा किए गए नवाचारों द्वारा, उद्यमों द्वारा ही समृद्ध व सशक्त भारत की परिकल्पना पूर्ण होगी। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

'स्वयंसिद्धा' कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राएं सम्मानित

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) एवं दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के संयुक्त तत्वावधान में खेल, शिक्षा, रचनात्मक गतिविधियों जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को सम्मानित करने के लिए 'स्वयंसिद्धा' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय के नार्थ कैंपस स्थित सर शंकर लाल हॉल में आयोजित 'स्वयंसिद्धा' कार्यक्रम में भारतीय महिला पहलवान बबीता फोगाट, उच्चतम न्यायालय में वकील मोनिका अरोड़ा एवं अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत उपस्थित रहे। जबकि पीजीडीएवी कॉलेज में आयोजित 'स्वयंसिद्धा' कार्यक्रम में पीलीभीत नगरपालिका अध्यक्ष आस्था अग्रवाल, अभाविप की केन्द्रीय कार्यसमिति सदस्य निधि त्रिपाठी, अभाविप दिल्ली के प्रांत संगठन मंत्री राम कुमार, डूसू सह-सचिव शिवांगी खरवाल ने हिस्सा लिया।

अभाविप एवं डूसू द्वारा आयोजित 'स्वयंसिद्धा-23' के अंतर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ने वाली लगभग पंद्रह सौ से अधिक छात्राओं को शिक्षा, पाठ्येतर गतिविधियों, एनएसएस, एनसीसी और खेल क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रयास करने हेतु मैडल, ट्राफी व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान रंगोली, निबंध, पोस्टर मेकिंग जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। नार्थ कैंपस स्थित सर शंकर लाल हॉल में आयोजित 'स्वयंसिद्धा' कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्राओं को संबोधित करते हुए भारतीय महिला पहलवान बबिता फोगाट ने कहा कि छात्राओं को विभिन्न क्षेत्रों में मजबूती से कार्य करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही स्वयं की आंतरिक शक्ति को पहचानने की आवश्यकता भी है, जो आपको आगे तक ले जाएगी । हमें देश के लिए बेहतर करना है। आज आत्मनिर्भर भारत के स्वर को मजबूती मिली है। अभाविप महिला सशक्तिकरण हेतु,महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए उत्कृष्ट कार्य कर रही है।

कार्यक्रम में अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत ने कहा कि जिस भारत को षड्यन्त्र के तौर पर कभी गरीब, कभी लाचार, अनपढ़, सपेरों के देश के रूप में दिखाया जाता था, वही भारत विभिन्न क्षेत्रों में आज विश्व का मार्गदर्शन कर रहा है। चंद्रयान-3 की सफलता से स्पेस क्षेत्र में भारत ने उत्कृष्ट स्थान पा लिया है। भारत का नेतृत्व आज विश्व में शांति लाने का कार्य कर रहा है I त्याग, सहायता, प्रेम जैसे मूल्य आधारित कार्य से देश की साख आज बढ़ी है। 'स्वयंसिद्धा' कार्यक्रम आपके विश्वास को जगाने के साथ-साथ आपको विजयी बनाने का,भारत को और सुंदर बनाने का संकल्प लेने का कार्यक्रम है।

कार्यक्रम में अभाविप की केन्द्रीय कार्यसमिति सदस्य निधि त्रिपाठी ने कहा कि परिषद ने परिसरों के साथ समाज में छात्राओं को केंद्रित कई कार्यक्रम जैसे स्वयंसिद्धा, ऋतुमति, मिशन साहसी आदि के द्वारा सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया है। आज परिसरों में पढ़ रही छात्राएं नए भारत के निर्माण को आधार देने वाली पीढ़ी है। इसलिए इस पीढ़ी को अपनी उद्यमशीलता बढ़ाकर निरंतर नवीन क्षेत्रों में सीखने का प्रयास करना चाहिए। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

राज्यपाल से वित्तीय भ्रष्टाचार में लिप्त पूर्व कुलपति पर कार्रवाई की मांग

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के एक प्रतिनिधिमंडल ने बिहार के राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर से मुलाकात कर पूर्णिया विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. राजेश सिंह के कार्यकाल के दौरान हुई वित्तीय अनियमितता, भ्रष्टाचार के मामले में बिहार लोकायुक्त द्वारा दी गई रिपोर्ट के आधार पर कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। मुलाकात के दौरान राज्यपाल ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि पूर्णिया विश्वविद्यालय में वित्तीय अनियमितता एवं भ्रष्टाचार से जुड़े मामले में लोकायुक्त की रिपोर्ट के आधार पर उचित कार्रवाई के दिशा-निर्देश राजभवन द्वारा शीघ्र जारी किए जाएंगे I

जानकारी हो कि बिहार स्थित पूर्णिया विश्वविद्यालय में पूर्व कुलपति प्रो. राजेश सिंह के कार्यकाल के दौरान हुई वित्तीय हेराफेरी एवं भ्रष्टाचार के मामले में लोकायुक्त ने भी अपनी रिपोर्ट दी थी, जिसमें पूर्व कुलपति के विरुद्ध कड़ी टिपण्णी करते हुए लोकायुक्त ने राज्यपाल से वित्तीय लेखा परीक्षा कराने का अनुरोध किया था। लोकायुक्त ने माना था कि प्रो. राजेश सिंह द्वारा वित्तीय शक्तियों का दुरुपयोग किया गया। लोकायुक्त ने अपनी रिपोर्ट राज्यपाल कार्यालय भेजने के साथ ही एक वित्तीय लेखा परीक्षा कराने के लिए कहा था। लोकायुक्त ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा कि प्रो. राजेश सिंह ने वित्तीय अनुशासनहीनता के साथ ही विश्वविद्यालय के वित्तीय कोष के उचित प्रबंधन को अनदेखा किया।

प्रतिनिधिमंडल में राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल, केन्द्रीय कार्यसमिति सदस्य नीतिश कुमार पटेल, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य जितेन्द्र राय, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य समृद्धि राठौर शामिल थे। 19 अगस्त को मुलाकात के बाद राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ला ने कहा कि कुलपति जैसे आदर्श पद पर रहते हुए प्रो. राजेश सिंह द्वारा की गई वित्तीय अनियमितताओं के कारण पूर्णिया विश्वविद्यालय की साख गिरी है। इसी संदर्भ में महामहिम राज्यपाल को ज्ञापन सौंपकर उचित कार्रवाई करने की मांग की गई, जिस पर राज्यपाल ने सकारात्मक आश्वासन दिया है।

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

अभाविप के पूर्व संगठन मंत्री वीरेश्वर द्विवेदी का निधन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं सत्तर के दशक में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्वी उत्तर प्रदेश के संगठन मंत्री वीरेश्वर द्विवेदी जी का 78 वर्ष की आयु में गत 4 सितंबर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार कानपुर स्थित पैतृक गांव भाल (राजपुर के पास) में हुआ ।

राष्ट्रधर्म पत्रिका के पूर्व सम्पादक, विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं संघ के वरिष्ठ प्रचारक वीरेश्वर द्विवेदी काफी समय से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से पीड़ित थे और लगभग एक माह तक उनका इलाज लखनऊ स्थित राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान में किया जा रहा था । डॉक्टरों के अथक प्रयासों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका ।

बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से प्रभावित स्वर्गीय वीरेश्वर जी की शिक्षा उरई स्थित डीवी कॉलेज से हुई और यही से उन्होंने परास्नातक तक शिक्षा ग्रहण की । 1966 में वह इसी कालेज में छात्रसंघ के प्रथम अध्यक्ष भी रहे। स्वर्गीय अशोक सिंघल जी की प्रेरणा से वे 1972 में दैनिक जागरण की नौकरी छोड़कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन गए । प्रयाग महानगर के प्रचारक रहने के अलावा उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्वी उत्तर प्रदेश के संगठन मंत्री के रूप में काम किया । राष्ट्रधर्म हिन्दी मासिक, विश्व हिन्दू परिषद की पत्रिका हिन्दू विश्व और पथ संकेत के वह सम्पादक भी रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्रीय बौद्धिक प्रमुख एवं क्षेत्र प्रचार प्रमुख आदि के दायित्वों का निर्वहन करने के अलावा उन्होंने आपातकाल के समय मेरठ से राजाराम शर्मा के छद्म नाम से 'अंगारा' नामक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन कार्य भी किया। उनके निधन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, अभाविप सहित अन्य राष्ट्रवादी संगठनों ने दुःख प्रकट करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है ।

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

जानकारी

एनसीईआरटी को मिला मानद विश्वविद्यालय का दर्जा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की मांग पूरी हो गई है I केंद्र सरकार ने एनसीईआरटी को मानद विश्वविद्यालय (डीम्डटूबीयूनिवर्सिटी) का दर्जा प्रदान कर दिया है I अब एनसीईआरटी अपनी खुद की डिग्री दे सकेगा। साथ ही शिक्षा क्षेत्र से जुड़ी मांग को देखते हुए नए कोर्स भी शुरू कर सकेगा। एनसीईआरटी के 63 वें स्थापना दिवस के अवसर पर यह घोषणा की गई I एनसीईआरटी निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी ने संस्थान को मानद विश्वविद्यालय का दर्जा दिए जाने की सराहना करते हुए कहा है कि इससे संस्थान की गुणवत्ता और काम-काज में और सुधार आएगा। मानद विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने के बाद एनसीईआरटी शिक्षा के क्षेत्र में अपने शोध में और तेजी ला सकेगा। साथ ही विश्व के दूसरे विश्वविद्यालयों के साथ शिक्षा क्षेत्र में आपसी सहयोग भी बढ़ा सकेगा। माना जा रहा है कि इसकी मदद से स्कूली बच्चों के लिए अध्ययन सामग्री को उनकी मातृभाषा में आसानी से तैयार किया जा सकेगा। साथ ही एनसीईआरटी और अनुवादिनी जैसे सॉफ्टवेयर की मदद से सभी 22 भाषाओं में शैक्षिक सामग्री विकसित की जाएगी।

अभाविप ने मनाया स्वाधीनता दिवस सुदूर गांवों तक फहराया तिरंगा

स्वाधीनता की 77 वीं वर्षगांठ पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने लद्दाख से कन्याकुमारी तक ध्वाजारोहण करते हुए तिरंगा यात्रा निकाली । अभाविप द्वारा इस वर्ष भी 'एक गांव-एक तिरंगा' अभियान चलाया गया। अभियान में अभाविप कार्यकर्ताओं ने अंडमान निकोबार द्वीप से लेकर भारत-तिब्बत सीमा पर स्थित ग्राम माणा और जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर, पूंछ से लेकर छत्तीसगढ़ के सुदूर नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शान से तिरंगा फहराया।

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अभाविप गत तीन वर्षों से 'एक गांव-एक तिरंगा' अभियान चला रही है। इस अभियान में छात्र-छात्राओं, शिक्षकों सहित बड़ी संख्या में आमजनों की सहभागिता रही। अबकी बार भी अभाविप कार्यकर्ताओं ने 'एक गांव-एक तिरंगा' अभियान में देश के अलग-अलग स्थानों में स्थानीय निवासियों के साथ मिलकर ध्वजारोहण किया और बाद में शोभा-यात्रा, सामूहिक राष्ट्र-गान गायन, भारत माता पूजन, तिंरगा यात्रा, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया । इन कार्यक्रमों के माध्यम से आम जनमानस में देशभक्ति की भावना के प्रकटीकरण का कार्य किया गया।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कश्मीर में भी अभाविप ने 'रन फॉर भारत मैराथन' का आयोजन किया । श्रीनगर में गुपकार चौक से लाल चौक तक हुई 'रन फॉर भारत मैराथन' में कश्मीर घाटी के सभी दस जिलों से आए एक हजार से अधिक छात्रों ने भाग लिया। इस आयोजन में अभाविप के राष्ट्रीय सचिव मुस्तफा अली ने छात्रों को संबोधित किया। कार्यक्रम का समापन श्रीनगर के प्रतिष्ठित लाल चौक में छात्राओं के राष्ट्रगान के साथ हुआ।

दिल्ली विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर के कला संकाय प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक विभागों से आए छात्रों ने हिस्सा लिया । कला संकाय स्थित स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा के निकट ध्वजारोहण किया गया। अभाविप एवं हिंदू विश्वविद्यालय की कला संकाय एवं वोकेशनल कोर्स इकाई ने संयुक्त रूप से परिसर स्थित नवीन विश्वनाथ मंदिर से तिरंगा यात्रा भी निकाली । तिरंगा यात्रा में लगने वाले भारत माता की जय और वंदे मातरम जैसे ओजस्वी नारों से पूरा परिसर गुंजायमान हो गया । यात्रा का समापन महिला महाविद्यालय के सामने स्थित मां सरस्वती की प्रतिमा के सामने हुआ । यात्रा की समाप्ति के पश्चात राष्ट्र प्रेम की कविताओं के ओजस्वी पाठ के साथ ही भारत माता की आरती एवं वंदे मातरम के सामूहिक गायन का आयोजन भी किया गया।

सिवनी में अभाविप ने 77वें स्वतंत्रता दिवस एवं परिषद के 75 वर्ष पूरे होने का अमृत महोत्सव भी मनाया गया। 1500 फीट लंबे तिरंगा को लेकर एक विशाल तिरंगा यात्रा निकाली गई। नगर के नागरिक एवं जनप्रतिनिधियों ने जगह-जगह पुष्पों की वर्षा करते हुए यात्रा का स्वागत किया। यात्रा में तीन हजार से अधिक छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया ।

अभाविप कार्यकर्ताओं ने रतनपुर में 1001 फीट लम्बी तिरंगा यात्रा निकाली। रतनपुर में लगातार चौथे वर्ष तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल रहे। तिरंगा यात्रा का आयोजन पांच किलोमीटर तक किया गया।

जहानाबाद में भी अभाविप ने तिरंगा यात्रा का आयोजन किया। छात्र-छात्राओं ने 1100 मीटर का तिरंगा लेकर यात्रा का शुभारंभ किया। नगर के स्पोर्ट्स कांपलेक्स से प्रारम्भ हुई तिरंगा यात्रा बाजार होते हुए गांधी मैदान में जाकर समाप्त हुई। अभाविप ने साहिबगंज के राजमहल अनुमंडल में भी तिरंगा यात्रा का आयोजन किया, यहां मुख्य आकर्षण 75 मीटर लम्बा तिरंगा रहा।

इसी तरह खजुराहो के राजनगर में अभाविप ने 750 फुट लम्बा तिरंगा लेकर विशाल यात्रा निकाली। यात्रा में लगभग एक हजार छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया । ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति टीम)

स्वाधीनता दिवस पर देशभर में तिरंगा यात्रा का आयोजन

RNI NO.: DELBIL/2017/73636 POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI

मिशन शक्ति

नारी सुरक्षा
नारी सम्मान
नारी स्वावलंबन

सशक्त नारी, सशक्त प्रदेश

1090	181	1076	112	1098	102	108
वीमेन पॉवर लाइन	महिला हेल्पलाइन	मुख्यमंत्री हेल्पलाइन	पुलिस आपातकालीन सेवा	चाइल्ड लाइन	स्वास्थ्य सेवा	एम्बुलेंस सेवा

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश